Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-52 | सम्पादक मुन्ना कुमार शर्मा | दिनांक 13 मार्च से 19 मार्च 2019 तक | वार्षिक शुल्क 150 रुपये
कल्पादि सम्वत् 1972949118 | फाल्गुन शुक्ल सप्तमी से फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी 2075 तक | पृष्ठ संख्या 12

राम कथा को जन-जन..... पृष्ठ- 2
गुणों का भंडार... पृष्ठ- 4
गोमाता की रक्षा के... पृष्ठ- 5
सरस्वती सभ्यता... पृष्ठ- 8
शांति की नौटंकी.... पृष्ठ- 12

होली की शुभकामनाएं

सभी देशवासियों व पाठकों को रगों के त्योहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं

चन्द्रप्रकाश कौशिक राष्ट्रीय अध्यक्ष | मुन्ना कुमार शर्मा राष्ट्रीय महासचिव | वीरेश त्यागी राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

कुंभ मेले का शिवरात्रि को हुआ शाही समापन

हिन्दू महासभा ने किया आस्था और श्रद्धा को नमन

● संवाददाता ●

प्रयागराज में दुनिया के सबसे अनूठे और बड़े आध्यात्मिक पर्व कुंभ में महाशिवरात्रि के दिन अंतिम स्नान किया गया। इसके साथ ही ४६ दिनों तक चलने वाला मेला संपन्न हो गया। रात १२ बजते ही श्रद्धालुओं ने संगम में डुबकी लगाकर सुख समृद्धि की कामना की। आखिरी दिन कुंभ मेले में १ करोड़ १० लाख श्रद्धालुओं ने गंगा और संगम में स्नान किया। कुल मिलाकर इस बार कुंभ में २२ करोड़ से अधिक शेष पृष्ठ 10 पर

वायु सेना ने कहा बालाकोट में लक्ष्य पूरा, पाक पर जारी रखेंगे कार्रवाही

हिन्दू महासभा ने सेना को अत्याधुनिक विमान और हथियार शीघ्र देने की उठाई मांग

● संवाददाता ●

भारतीय वायुसेना के प्रमुख ने कहा कि पाकिस्तान की सीमा के अंदर बालाकोट में भारत के लड़ाकू विमानों ने जैश के ठिकानों पर जो हमला किया वो कारगर था और ये गिनना उनका काम है नहीं की इस हमले में कितने आतंकी मारे गए। उन्होंने कहा कि बालाकोट के बाद हमने जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के एफ–१६ विमान को भी मार गिराया। हमने अपने निशाने पर सटीक अंजाम दिया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने सेना के शौर्य को नमन करते हुए सरकार से कहा है कि मिग–२१ विमान काफी पुराना हो गया है, इसलिए सरकार तुरंत राफेल जैसे अत्याधुनिक विमान तथा अन्य अत्याधुनिक हथियार सेना को उपलब्ध कराए। उथर, इस मामले पर राजनीति थमने का नाम नहीं ले रही है। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने दावा किया कि भारत के इस हमले में २५० आतंकी मारे गए। अमित शाह ने कहा, उरी हमले के बाद हमारी सेना ने पाकिस्तान में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया। पुलवामा हमले के बाद सरकार ने १३वें दिन एयर स्ट्राइक कर २५० से शेष पृष्ठ 10 पर

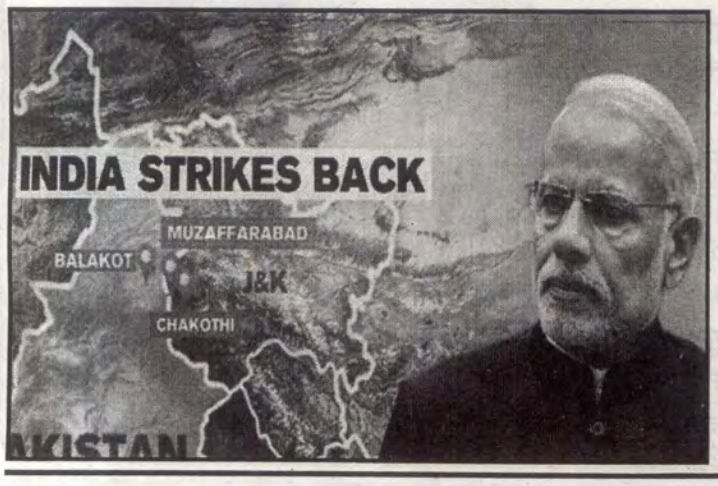

राम कथा को जन-जन तक पहुँचाने वाले गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास का अवतरण ऐसे काल में हुआ जब हिन्दू समाज गहरी निराशा में डूबा हुआ था। मध्य एशिया के बर्बर और खूंखार मुगलों ने भारत पर लगाातार आक्रमण कर अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी। हिन्दुओं को अपमानित कर उनका तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। इन कठिन परिस्थितियों में तुलसीदास ने भगवान राम की भक्ति और शक्ति को पुनर्जीवितकर हताश और निराश हिन्दुओं के हृदय में गौरवपूर्ण स्वाभिमान जागृत कर दिया था।

बाबा वेणी माधवदास कृत 'मूल गोसाई चरित्र' के अनुसार तुलसीदास की जन्मतिथि सम्वत् १५५४ श्रावण शुक्ल सप्तमी है। इनका जन्म बांदा (उ.प्र.) के राजापुर में एक सरयूपारी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका जन्म अभुक्तमूल में हुआ था। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इसमें बच्चे का जन्म लेना अशुभ माना जाता है। इस कारण जन्म लेते ही माता–पिता ने इन्हें त्याग दिया था। मुनिया नाम की दासी ने पाँच वर्ष तक इनका पालन किया। मुनिया की मृत्यु के बाद बाबा नरहरि दास ने इन्हें अपने पास रख इनका विधिवत नामकरण तुलसीदास किया। वे तुलसीदास को लेकर काशी चले गये, वहाँ इन्होंने तुलसीदास को १५ वर्षों तक शिक्षा दी तथा वेद, पुराण, उपनिषद, दर्शन, इतिहास आदि में प्रवीण कर दिया।

तुलसीदास चारों धाम व कैलाश मानसरोवर की लम्बी यात्रा पूर्ण कर अंत में चित्रकूट पहुँचे। उनकी यह यात्रा मात्र तीर्थयात्रा नहीं थी, वे देश के विभिन्न भागों में समाज की दशा निकट से देखना चाहते थे। उन्होंने देखा कि हिन्दुओं के सब धर्म ग्रंथ संस्कृत भाषा में हैं। जिसे ज्यादातर लोग समझ नहीं पाते, धर्म का सच्चा और कल्याणकारी स्वरूप लोगों की आँखों से ओझल हो रहा है। समाज में अज्ञानता, अंध ाविश्वास और छुआछूत जैसी कुप्रथाओं का बोलबाला हो गया है। देश के बड़े भूभाग पर मुसलमानों का शासन है व हिन्दू समाज पर घोर अत्याचार हो रहे हैं। विभिन्न मत–मतान्तरों में आपसी कटुता और द्वेष हिन्दुओं की एकता को तोड़ रहा है।

हिन्दू समाज की चिंताजनक स्थिति पर तुलसीदास ने गंभीर चिंतन किया। उनके मन में प्रेरणा जागी कि जनभाषा में रामकथा को लिखा जाये। सम्वत् १६३१ की रामनवमी को तुलसीदास ने अपना अनुपम ग्रंथ 'रामचरित मानस' लिखना प्रारम्भ किया। इस महान ग्रंथ का कुछ भाग काशी में तथा अधिकांश अयोध्या में लिखा गया। रामचरित मानस दो वर्ष सात मास और २६ दिन में पूरा किया गया। हताश, भ्रमित और अज्ञान के अंधकार में भटकते हुए हिन्दू समाज के लिए यह ग्रंथ सर्वरोगनाशक रसायन सिद्ध हुआ।

राम के चरित्र के माध्यम से तुलसीदास जी ने सामाजिक समरसता को संदेश दिया है। उनके विचार में किसी को नीच या अछूत मानना उस व्यक्ति का ही नहीं अपितु ईश्वर का तिरस्कार है। राम भीलनी, शबरी, केवट, निषादराज, जटायु, कागभुशुण्डि तथा वानर आदि वंचित समाज के प्रतिनिधि हैं। राम शबरी के जूठे बेर खाते हैं और कहते हैं–

जाति पांति कुल धर्म बड़ाई, धन बल परिजन गुन चतुराई।
भगतिहीन नर सोहहि कैसा, बिनु जल वारिद देखिअ जैसा।।

अर्थात् जाति–पांति, धन, परिवार, चतुराई आदि मेरे लिए कोई महत्व नहीं रखते। ऊँचे कुल, जाति वाला या धनवान व्यक्ति यदि भक्तिहीन है तो वह जलविहीन बादल के समान शोभाहीन होता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने विनय पत्रिका, गीतावली, जानकी मंगल आदि लगभग एक दर्जन काव्य ग्रंथ लिखे परन्तु रामचरित मानस सबसे लोकप्रिय है। इसके आरम्भ में ही गोस्वामी जी ने लिखा, 'नाना पुराण निगमागम सम्मतम्' अर्थात् वेदों, शास्त्रों, पुराणों का सार ही इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है। रामचरित मानस का अनुवाद अनेक भारतीय व विदेशी भाषाओं में हुआ है। जनभाषा में लिखा गया यह ग्रंथ युगों–युगों तक हिन्दू जाति को प्रेरणा देता रहेगा व भक्तों के हृदय को आनन्दित करता रहेगा।

डॉ. कपिल अग्रवाल

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों के पास धन तो आयेगा परन्तु पत्नी के स्वास्थ्य में अधिक व्यय होगा। आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव वाली स्थिति बनी रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लम्बे समय से रूके हुये कार्य इसी माह पूर्ण होंगे। धार्मिक आडम्बरों से बचें।

वृष : रूके हुए कार्य पूरे होगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। घर परिवार में भी सुधार होने की संभावना है। आर्थिक योजनाओं में किया गया प्रयास सार्थक रहेगा। सन्तान की ओर से मन प्रसन्न रहेगा। सोंच समझकर लिए निर्णयों में सफलता मिलेगी।

मिथुन : आर्थिक स्थिति में प्रगति होगी लेकिन पारिवारिक समस्याओं से आपको मानसिक कलेश सहना पड़ सकता है। किसी भी नये कार्यो में रूकावट पैदा हो सकती है।अतः आप इस समय नये कार्य को शुरू न करें। मित्र या रिश्तेदार के कारण आपको हानि हो सकती है।

कर्क : यह सप्ताह आपके लिए सामान्य रहेगा। किसी अन्य स्रोत से अचानक धन का लाभ हो सकता है। इस राषि वाले जातक भूल से भी कर्ज का लेन–देन न करें, अन्यथा समस्या में पड़ जायेंगे। प्राइवेट जॉब वाले लोग अपने बॉस से विशेष सावधानी रखें। मकान से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान होगा। पारिवारिक स्थिति इन दिनों अच्छी रहेगी।

सिंह : कुछ लोग ऋण लेकर किये उद्योग में हानि की सम्भावना है। नौकरी वालों को अचानक स्थान परिवर्तन की सम्भावना है। कुछ लोगों को सन्तान की प्राप्ति होगी। प्राइवेट जॉब वाले लोग अपने बॉस से विशेष सावधानी रखें। मकान से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान होगा। इस राषि वालों की पारिवारिक स्थिति इन दिनों अच्छी रहेगी।

कन्या : आपको भरपूर भाग्य का सहारा मिलेगा। आर्थिक स्थिति में वृद्धि और रूके कार्यो में प्रगति होगी। नौकरी पेशा लोगों को पद प्रतिष्ठा आदि का लाभ होगा। कार्य व्यापार में वृद्धि व लगभग सभी तरह के कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। परन्तु भविष्य की योजनाएं बहुत सूझबूझ कर बनाएं।

तुला : कुछ लोगों की आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा मजबूत होगी। स्वास्थ्य के मामलें में यह समय अच्छा नहीं है। चोट या आपरेशन भी संभव है। यह समय सन्तान के लिए भी हितकारी नहीं है। रूके हुये कार्यो में प्रगति होगी परन्तु आपकी सक्रियता महत्वपूर्ण रहेगी।

वृश्चिक : इस सप्ताह अनावश्यक किसी से विवाद हो सकता है। लेकिन पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मकान वाहन पर खर्च के योग बन रहे है। आप अपने किसी नजदीकी सहयोगी के कारण परेशानी में पड़ सकते है। इस समय आपको कुछ यात्रायें भी करनी पड़ सकती है।

धनु : इस सप्ताह सभी वर्गो के लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय आपके लिए अच्छा नहीं है। कोई रूका हुआ कार्य आपका इस समय पूर्ण होगा। आलस्य आपके कार्यो में रूकावट पैदा करेगा।

मकर : अत्यधिक आत्मविष्वास आपको परेशानी में डाल सकता है। किसी नजदीकी के साथ विचार–विमर्श होगा। सन्तान के स्वास्थ्य को लेकर मन चिन्तित रह सकता है। आर्थिक स्थिति में प्रगति होगी लेकिन पारिवारिक समस्याओं से आपको मानसिक क्लेश सहना पड़ सकता है।

कुम्भ : इस सप्ताह आपको गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से शत्रु भी उत्पन्न होंगें। अपने पुरूषार्थ पर अधिक भरोसा रखें। अपने श्रेष्ठ सम्बन्धों का लाभ उठायें। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह समय काफी शानदार रहेगा। इस राशि वालों की धन की स्थिति काफी कमजोर हो सकती है।

मीन : कुछ लोगों के रूके हुए कार्यो में प्रगति होगी । आर्थिक योजनाओं में किया गया प्रयास सार्थक रहेगा। सन्तान की ओर से मन प्रसन्न रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें अन्यथा रोग आप पर हावी हो जाएगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाती कुजाती।।
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अतिअ सुजावनु माहुरु मीचू।।
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा।।
कासी मग सुरसरि कमनासा । मरु मारव महिदेव गवासा।।
सरग नरग अनुराग बिरागा। निगमागम गुन दोष बिभागा।।

दुःख–सुख, पाप–पुण्य, दिन–रात, साधु–असाधु, सुजाति–कुजाति, दानव–देवता, ऊँच–नीच, अमृत–विष, सुजीवन (सुन्दर जीवन)–मृत्यु, माया–ब्रह्म, जीव–ईश्वर, सम्पत्ति–दरिद्रता, रंक–राजा, काशी–मगध, गङ्गा–कर्मनाश, मारवाड़–मालवा, ब्राह्मण–कसाई, स्वर्ग–नरक, अनुराग–वैराग्य (ये सभी पदार्थ ब्रह्मा की सृष्टि में है) वेद–शास्त्रों ने उनके गुण दोषों का विभाग कर दिया है।।३–५।।

दो० - जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार।।६।।

विधाता ने इस जड़–वेतन विश्व को गुण–दोषमय रचा है, किन्तु संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं।।६।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 13 मार्च से 19 मार्च 2019 तक

अध्यक्षीय

इस बार हो आतंक का समूल नाश

एक तरफ अभी विंग कमांडर अभिनन्दन की रिहाई हुई भी नहीं थी कि काश्मीर में हमारे पांच और जवान की शहादत हो गई। ऐसे में भारत सरकार को चेत जाना चाहिए कि यही मौका है जब आतंकवाद का समूल नाश कर देना चाहिए। इसके लिए भारत को पाकिस्तान में बैठे आतंक के आकाओं को उनके घर में घुसकर मारना चाहिए। पाकिस्तान आसानी से सुधरने वाला नहीं, इसका पता उसकी उन हरकतों से चल रहा है जो वह भारतीय सीमा पर सैन्य दुस्साहस के रूप में अपनी खिसियाहट मिटाने के लिए कर रहा है। इसकी आशंका थी कि भारतीय वायुसेना की ओर से बालाकोट में किए गए गए हवाई हमले के बाद बौखलाया पाकिस्तान ऐसी हरकतें करेगा। इन हरकतों का जवाब पूरी दृढ़ता और निर्ममता से दिया जाना नितांत अनिवार्य है। भारत ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि वह युद्ध नहीं चाहता। आगे भी उसकी यही चाहत रहनी चाहिए, लेकिन अगर पाकिस्तान हद लांघता है तो भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि उसे उसकी भारी कीमत चुकानी पड़े। पाकिस्तान की हरकतों से यह साफ है कि वह जरूरी सबक सीखने को तैयार नहीं। वह बालाकोट हमले का जवाब देने की कोशिश इसीलिए कर रहा है, ताकि अपना चेहरा बचाने के साथ अपनी गलतियों पर पर्दा डाल सके। उसकी ऐसी ही एक कोशिश को नाकाम किया गया और उसके एक विमान को मार भी गिराया गया, लेकिन इस दौरान भारतीय वायुसेना का भी एक विमान क्षतिग्रस्त हुआ और उसके पायलट को जख्मी हालत में पाकिस्तान में उतरना पड़ा। दुर्भाग्य से वहां उसे बंधक बना लिया गया। सैन्य संघर्ष में ऐसे हादसे होते हैं। इनसे हमें विचलित नहीं होना चाहिए और न ही अपने लक्ष्य को ओझल होने देना चाहिए। हमें इस लक्ष्य से डिगना नहीं कि पाकिस्तान पर तब तक दबाव बनाए रखना है, जब तक वह आतंकियों को पालने–पोसने से तौबा नहीं करता। इसके लिए हरसंभव उपाय किए जाने चाहिए और उसके किसी झांसे में नहीं आना चाहिए, ठीक वैसे ही *जैसे बालाकोट में हमला करते समय परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की* उसकी धौंस की अनदेखी कर दी गई। ऐसा पहले कभी नहीं किया गया। आज जितनी जरूरत पाकिस्तान के सैन्य दुस्साहस से सावधान रहने और उसे करारा जवाब देने की है, उतनी ही उसके छल–प्रपंच से सतर्क रहने की भी। इसके प्रति तो हर देशवासी को सजग रहना होगा कि देश में शांति और सद्भाव बना रहे। इससे ही सेनाओं को हर चुनौती का सामना करने का संबल और साहस मिलेगा। पाकिस्तान के साथ दुनिया को यह संदेश जाना ही चाहिए कि आज का भारत नए मिजाज का भारत है। इस भूमिका के निर्वाह के लिए केवल राजनीतिक परिपक्वता का ही प्रदर्शन नहीं होना चाहिए, बल्कि सेना की जरूरतों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने की तत्परता भी दिखाई जानी चाहिए। यह खेद की बात है कि अतीत में यह जानते हुए भी ऐसा नहीं किया गया कि हमारी सेनाएं आधुनिकीकरण की दौड़ में पिछड़ रही हैं। यह समय गलतियों का हिसाब करने का नहीं, बल्कि सही सबक सीखने का है। यह ठीक नहीं कि जब देश युद्ध जैसे हालात से दो–चार है, तब वायुसेना को निर्णायक मजबूती देने वाले राफेल विमानों का सौदा अदालत में है।

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

इस्लामिक देशों ने भी पाक को नकारा

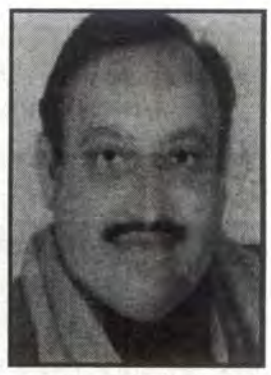

पूरी दुनिया में पाकिस्तान अब बदनाम हो चुका है। रही–सही कसर इस्लामिक देशों की बैठक में निकल गई क्योंकि कहने को तो पाकिस्तान यह कह रहा है कि वह स्वयं इस बैठक में नहीं गया है लेकिन सच्चाई यह है कि इस बार इस्लामिक देशों ने उसे भाव ही नहीं दिया। विश्व स्तर पर बदनाम हो रहे पाकिस्तान को ओआईसी के मौजूदा नेतृत्व से बदलते जमाने के साथ चलना सीखना चाहिए! यह बहस तो अभी लंबी खिंचेगी कि पाकिस्तान मूलतः किन कारणों से भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर अभिनंदन वर्तमान को आनन–फानन रिहा करने पर सहमत हो गया, लेकिन इसमें कोई संशय नहीं कि उसे इस्लामी देशों के सबसे बड़े समूह ओआईसी यानी इस्लामिक सहयोग संगठन में मुंह की खानी पड़ी। यह बेहद महत्वपूर्ण है कि इस संगठन ने पाकिस्तान की नाराजगी और यहां तक कि आयोजन के बहिष्कार की उसकी धमकी की भी अनदेखी कर यह सुनिश्चित किया कि अतिथि वक्ता के तौर पर भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज उसके मंच को अवश्य संबोधित करें। उन्होंने ऐसा ही किया। इसी के साथ इस पर मुहर लग गई कि खुद इस्लामी देश पाकिस्तान को एक सीमा से अधिक अहमियत देने को तैयार नहीं। उनके रवैये ने भारत के बढ़ते कद को ही प्रमाणित किया। यह इसलिए उल्लेखनीय है, क्योंकि एक समय पाकिस्तान के विरोध के चलते भारतीय प्रतिनिधिमंडल को मोरक्को में इस संगठन के समारोह में शिरकत नहीं करने दिया गया था। दरअसल तब पाकिस्तान ने जिद पकड़ ली थी कि यदि भारतीय दल को अनुमति दी गई तो वह आयोजन का बहिष्कार कर देगा। वक्त ने करवट ली और अब हालत यह है कि अबूधाबी में उसके विरोध को दरकिनार कर दिया गया। यह सही है कि हाल के समय में भारत ओआईसी में भागीदारी करने का इच्छुक नहीं रहा और अभी भी यह साफ नहीं कि भारतीय नेतृत्व इस संगठन में अपनी भावी भूमिका को लेकर क्या सोच रहा है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि पाकिस्तान इसकी अनदेखी करे कि भारत के इस्लामी देशों से संबंध सदियों पुराने हैं। इन संबंधों और भारत में मुसलमानों की बड़ी आबादी के कारण ही भारत को मोरक्को में निमंत्रित किया गया था। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में कमजोर पड़ने के साथ ही विश्व स्तर पर बदनाम हो रहे पाकिस्तान को ओआईसी के मौजूदा नेतृत्व से बदलते जमाने के साथ चलना सीखना चाहिए, लेकिन शायद उसने न सुधरने की ठान ली है। यदि ऐसा नहीं है तो फिर क्या कारण है कि वह एक ओर शांति का संदेश देने के लिए विंग कमांडर अभिनंदन को छोड़ने का फैसला करता है और दूसरी ओर ओआईसी में भारतीय विदेश मंत्री के संबोधन को सुनने के लिए तैयार नहीं होता? इससे यही पता चलता है कि पाकिस्तान भारत के प्रति अपने बैर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। इसीलिए उससे सतर्क रहना होगा। अभिनंदन को छोड़ने का उसका फैसला यह नहीं साफ करता कि वह आतंक का साथ छोड़ने को तैयार है। वह यह काम इसलिए आसानी से नहीं करने वाला, क्योंकि उसे लगता है कि भारत को आतंकवाद के जरिए ही झुकाया जा सकता है। इस मुगालते से ग्रस्त होने के कारण ही मुंबई हमले के गुनहगार उसके यहां आज भी खुले घूम रहे हैं। इमरान खान को शांति का मसीहा करार देने वाले यह समझें तो बेहतर कि एक तो जैश जैसे संगठन उनके लिए वोट जुटाने का काम कर चुके हैं और दूसरे, वह पाकिस्तान के असली शासक नहीं हैं। कूटनीतिक चाल में पाकिस्तान हर कदम पर फेल हो रहा है लेकिन फिर भी वह अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा है।

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव
E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

गुणों का भंडार है ककड़ी

✍ डॉ. सुरेन्द्र कुमार ''महाचंद''

आयुर्वेद के अनुसार कच्ची ककड़ी शीतल, गुरु, रूक्ष, मधुर, ग्राही, रूचिकारक, तृप्ति कारक व शीतवीर्य होती है। ककड़ी पित्त शामक होती है मगर कफ व वात को बढ़ाती है। ककड़ी दाह, रक्तविकार, रक्त पित्त, छर्दि आदि को दूर करती है। इसीलिए यह नकसीर में लाभकारी होती है। ककड़ी मूत्रल होती है इसीलिए मूत्रसंस्थान सम्बन्धी अनेक रोगों में यह लाभकारी है। मूर्छा व थकान को दूर करती है। यह मल को ढीला कर देती है जिससे बवासीर के रोगी को लाभ मिलता है।

यह मधुमेह रोग में भी लाभकारी है। ककड़ी आमाशय व यकृत की सूज़न में भी लाभकारी है। जब मूत्र में जलन हो, कष्ट के साथ बूँद–बूँद कर मूत्र आ रहा हो, मेदे में सूजन हो, मूत्रावरोध जैसी स्थिति बन गई हो तो ककड़ी के ३०–४० मिलीलीटर रस में १०–१५ मिली नींबू का रस, ४–५ ग्राम जीरे का चूर्ण तथा १५–२० ग्राम मिश्री मिलाकर लेने पर बहुत अच्छा लाभ मिलता है। इसे लगातार कई दिन तक लें।

मूत्रकृच्छता रोग में यदि उपरोक्त से लाभ न हो तो ककड़ी के बीज ५०० ग्राम, दारू हरिद्रा ५० ग्राम, मुलहटी ५० ग्राम लेकर बारीक चूर्ण बना लें। १.५ से २ ग्राम की मात्रा में नित्य तीन बार जल से लेने पर आशातीत लाभ मिलेगा। यदि स्वस्थ व्यक्ति भी इसे यदा–कदा प्रयोग करता रहे

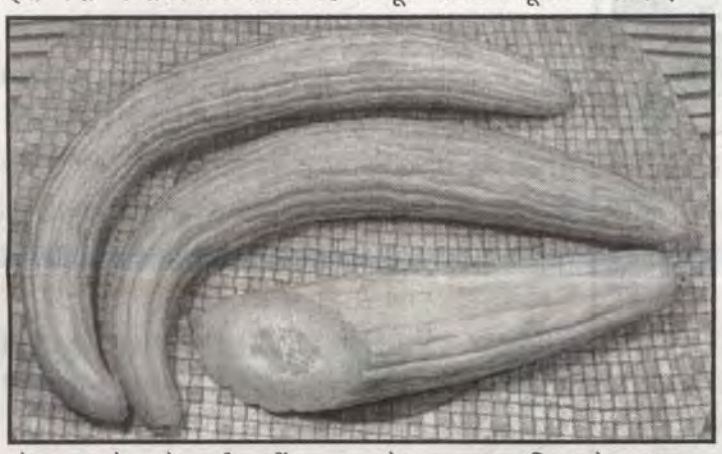

तो उक्त रोग होगा ही नहीं।

अम्ल पित्त हो जाने की स्थिति में ककड़ी का रस १०० मिली लीटर, धनिये का रस ५० मिली लीटर व मिश्री १५–२० ग्राम मिलाकर पीने पर पर्याप्त लाभ मिलता है। इसे दिन में ३–४ बार लें। शरीर में दाह होने पर मुलायम ककड़ी के छोटे–छोटे टुकड़े कर उन पर मिश्री का बारीक चूर्ण बुरक कर भली प्रकार चबाकर खाने पर लाभ मिलता है।

मूत्रमार्ग में अथवा गुर्दे में पथरी हो जाने पर ककड़ी के बीज ५० ग्राम व छोटी इलायची ४० ग्राम कूट पीसकर चूर्ण बना लें। इसमें से ५००–५०० मिग्रा से १–१ ग्राम तक रोगी के बलाबल के अनुसार जल से प्रातः सायं लेने पर पथरी गल कर निकल जाती है। इसे कम से कम ६ माह तक अवश्य प्रयोग करें फिर धीरे–धीरे बंद कर दें। इसके अतिरिक्त मौसम में कच्ची ककड़ियों का सेवन करें।

अजीर्ण होने पर कोमल ककड़ी के ५०–६० मिली. रस में पोदीना का १०–१५ मिली. रस मिलाकर, ५ काली मिर्च के महीन चूर्ण व थोड़े से काले नमक के साथ दिन में तीन बार लेने पर पूरा लाभ मिलता है। रक्तपित्त में ककड़ी का रस ५०–६० मिली., १०० मिली. शहद के साथ मिलाकर लेने पर लाभ मिलता है। रक्तपित्त में इसके फल व बीच की अपेक्षा जड़ अधिक लाभकारी होती है। जड़ को पीसकर एक चम्मच शहद में मिला लें फिर चावल के धोवन के साथ सेवन करें। जड़ शुष्क हो तो चूर्ण १० ग्राम से १५ ग्राम तक लें। यदि ताजा हो तो रस २५ से ५० ग्राम तक लें।

श्वेत प्रदर में ककड़ी के बीज २५ से ५० ग्राम तक लेकर उनमें १० से २० ग्राम जीरा व थोड़ी सी मिश्री मिलाकर चूर्ण बना लें और १ से ३ ग्राम की मात्रा में प्रातः जल से लें। पूरा लाभ मिलेगा।

बालों को झड़ने व टूटने की स्थिति में ककड़ी के रस से नित्य बालों की जड़ों में मालिश करें। इससे बाल घने, काले, चमकीले व मजबूत बनते हैं, साथ ही ककड़ी का सेवन करें।

वास्तव में बालों के स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक तत्व सिलिकौन ककड़ी में प्रचुर मात्रा में मिलता है। ककड़ी के बीच विटामिन बी व ई के अच्छे स्रोत हैं। इसीलिए ये पौष्टिक होने के साथ कामशक्ति वर्धक भी होते हैं। ककड़ी के बीजों का संचय शुष्क व ठंडे स्थान पर करना चाहिए। इस प्रकार रखे सुरक्षित बीज दो वर्ष तक भी उपयोग किये जा सकते हैं। ककड़ी का प्रयोग केवल ग्रीष्म काल में ही करना चाहिए। वर्षाकाल में यह कम लाभकारी होती है। ककड़ी कच्ची ही प्रयोग करनी चाहिए। पकाने पर इसके अनेक गुण नष्ट हो जाते हैं। ककड़ी का कच्चा फल ही प्रयोग करना चाहिए। पका फल तृषा, अग्नि व पित्तवर्धक होता है। ककड़ी को खूब चबाकर खाना चाहिए अन्यथा यह आमाशय में विकार उत्पन्न कर सकती है। खाने से पूर्व ककड़ी को भली प्रकार रगड़कर धो लेना चाहिए अन्यथा इस पर पाये जाने वाले रोम (रोयें) विकार पैदा कर सकते हैं। ककड़ी को ज्यादा न खायें। ज्यादा खा लेने पर अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं तथा अजीर्ण की शिकायत बन जाती है। अधिक सेवन से कभी–कभी ज्वर भी हो जाता है।

शरीर में चुस्ती लाकर ऊर्जा देता है खरबूजा

गर्मी के मौसम में फलों की बात करें तो आम व तरबूज के बा द जो फल सबसे ज्यादा खाया जाता है वह है खरबूजा। इसमें ६५ फीसदी पानी होने के अलावा विटामिन्स और मिनरल्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। गर्मियों में इसे खाने से पेट और हृदय में होने वाली जलन की समस्या तो दूर होती ही है साथ ही यह शरीर को ठंडा रखता है। इसमें शुगर और कैलोरी की मात्रा कम होने से वजन घटाने में यह मददगार है। विटामिन सी से भरपूर यह फल वजन घटाने में काफी लाभदायक होता है। इसे हैल्दी स्नैक्स के तौर पर खाया जा सकता है। मिठाईयों से परहेज करने वाले लोग इसकी मिठास का लुत्फ उठा सकते हैं। प्रतिदिन इसका सेवन लाभदायक होता है।

हृदय को रखे सेहतमंद : ऐसे हृदय रोगी जिनका रक्त गाढ़ा होता है उन्हें कभी भी रक्त के जमने से हार्ट अटैक आने की संभावना रहती है। ऐसे में एक खास प्रकार के एंटीकोएग्युलेट एजेंट से युक्त खरबूजा खाना रक्त कोशिकाओं को जमने से रोकता है। इससे रक्त संचार बेहतर रहने से हार्ट अटैक नहीं आता व हार्ट स्वस्थ रहता है।

मजबूत पाचनतंत्र : जिन्हें अपच के अलावा कब्ज, एसीडिटी, खट्टी डकारें या फिर पेट से जुड़ी अन्य समस्याएँ हैं उनके लिए खरबूजा रामबाण है। यह पाचनतंत्र को दुरुस्त करता है जिससे इन समस्याओं में आराम मिलता है। रोजाना खरबूजे की दो–तीन फांक आराम से खा सकते हैं।

किडनी के लिए अच्छा : खरबूजे में मूत्रवर्धक क्षमता काफी अच्छी होती है। इस कारण किडनी का कार्य सुचारू होता है और यह विषैले पदार्थ बाहर निकालता है। मूत्राशय में पथरी होने पर मूत्र का त्याग करने में दर्द हो तो खरबूजे के बीज चूर्ण को गर्म पानी में लेने से आराम होता है। कब्जीयत रहने पर खरबूजा खाने से लाभ होता है। गर्मी के दिनों में खरबूजे को खाने से लू की संभावना कम रहती है।

नारियल एक गुण अनेक

✍ डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

हमारे देश में कोई भी धार्मिक या सामाजिक समारोह हो, उसका प्रारंभ श्रीफल या नारियल से होता है। यह एक अत्यंत उपयोगी फल है। काया को ऊर्जा प्रदान करने वाले समस्त तत्व इसमें पाए जाते हैं। पाचक रस भी इसमें पाया जाता है। यह विटामिन ए, प्रोटीन व खनिज तत्वों से ओतप्रोत फल है। इसमें वसा, प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस व लोहा भी काफी मात्रा में पाए जाते हैं। खाने में रसदार होने के साथ–साथ ही व्याधियों में यह विश्वसनीय औषधि है। यही नहीं यदि सौंदर्य की दृष्टि से देखा जाए, तो नारी सौंदर्य बढ़ाने में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

परिचय : नारियल का पेड़ बहुत बड़ा होता है। यह खजूर एवं ताड़ के पेड़ों की भाँति एकदम सीधा एवं ऊँचा होता है। इसके ऊपर के हिस्से में खजूर की भाँति पत्ते लगते हैं। उन्हीं पत्ती के मध्य नारियल लगते हैं।

पर्याय : संस्कृत में नारियल, श्रीफल, हिन्दी में नारियल, खोपरा, बंगाल में डाब, बाम्बे में महाद, गुजराती में नारेल, तेलगू में नालिकारम्मू और अंग्रेजी में कोकोनेट कहते हैं।

गुणधर्म : आयुर्वेद के अनुसार नारियल भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्धक, कठिनता से पचने वाला, बस्तिशोधक, बलकारक, पौष्टिक, कफकारक, जायकेदार, संकोचक एवं शोध, तृषा, दाह, पित्त, वातपित्त, रक्तविकार एवं क्षत क्षय का शमन करता है।

औषधीय प्रयोग : औषधि के रूप में नारियल का तेल १०० मि.ली., आधा नींबू का रस डालकर मालिश करने से त्वचा रोग, विशेषकर खुजली में फायदा होता है या १०० मि.ली. तेल में शुद्ध देशी कपूर मिलाकर लगाने से रक्त विकारजन्य व्याधि खाज–खुजली (कंडु) दूर हो जाते हैं। इसी तेल को रात में सोते समय दाद ठीक हो जाएगा, नारियल का तेल तथा चूने का पानी दोनों को समभाग लेकर खूब फेंट लें। इससे वह जमकर मलहम की शक्ल में हो जाएगा। इस मलहम को आग से जले हुए शरीर के किसी भी स्थान पर लगाने से दर्द और जलन दूर हो जाती है तथा कुछ दिनों के निरंतर प्रयोग से घाव भी अच्छा हो जाता है। जल जाने पर तुलसी का रस और नारियल का तेल फेंटकर लगाने से भी जलन मिटती है। यदि फफोला पड़ गया है या घाव हो तो शीघ्र ठीक हो जाता है। यदि हाथ–पैर की अंगुलियाँ बहुत सख्त और मोटी हैं। नाखून भी थोड़े बढ़ते हैं, फिर टूट जाते हैं, तो सप्ताह में तीन बार हाथ–पैर की गुनगुने नारियल के तेल से मालिश करें। नाखून बढ़ाने के लिए मालिश के बाद दो–तीन मिनट तक

शेष पृष्ठ 11 पर

गोमाता की रक्षा के लिए समर्पित जीवन लाला हरदेव सहाय

✍ स्व. शिव कुमार गोयल

हमारे धर्मशास्त्रों में मातृभूमि के महत्व पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया है। वेद का कथन है—'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। इस आदेश का असंख्य महापुरुष पालन करते हुए मातृभूमि की समृद्धि के लिए, उसकी अखंडता की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहे हैं। मातृभूमि के लिए सर्वस्व समर्पित करने की प्रेरणा पुराणों तथा उपनिषदों में भी दी गई है। परमगति को कौन प्राप्त होते हैं, इसका विश्लेषण करते हुए कहा गया है—

द्वाविमौ पुरुषौ लोके
सूर्यमंडलभेदिनौ।
परिव्राड् योगयुक्तश्च रणे
चाभिमुखो हतः।।

अर्थात योगयुक्त संन्यासी और रण में जूझते हुए वीरगति को प्राप्त होने वाला वीर—ये दो पुरुष सूर्यमंडल को भेदकर परमगति को प्राप्त होते हैं। धर्मशास्त्रों के वचनों से प्रेरणा लेकर समय—समय पर माता के सपूत मातृभूमि की रक्षा के लिए अनादिकाल से आत्मोत्सर्ग करने, प्राणदान करने, शीशदान तक करने को तत्पर रहते रहे हैं। महापुरुषों की इसी पावन परम्परा की श्रृंखला में एक नाम है—'लाला हरदेव सहाय'। उनका अनूठा बहुमुखी व्यक्तित्व था। वे जहाँ प्रखर स्वाधीनता सेनानी थे, वहीं हिन्दी व शिक्षा के अनन्य प्रचारक भी थे। उन्होंने हिसार जिले के गाँव—गाँव में हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की स्थापना कर ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करने का अनूठा प्रयोग किया। गाँवों में खादी तथा अन्य स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन देकर 'स्वरोजगार' का पहला सफल प्रयास किया। एक यशस्वी सम्पादक व प्रभावी लेखक के रूप में समाज के जागरण में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। भारतीयता के प्रतीक गोवंश के महत्व को साहित्य व पत्र—पत्रिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत करके उन्होंने गोरक्षा की भावना को प्रकट किया।

लाला जी जहाँ एक प्रखर स्वाधीनता सेनानी, हिन्दी के अनन्य प्रचारक, निष्काम समाजसेवी, स्वदेशी के निष्ठावान समर्थक व परम गोभक्त थे वहीं उन्होंने 'ग्राम सेवक' व 'गोधन' का अनेक वर्षों तक सफल सम्पादन करके यह सिद्ध किया कि वे एक यशस्वी व निर्भीक सम्पादक भी हैं। इसी प्रकार उन्होंने एक दर्जन से ज्यादा पुस्तकों की रचना भी की जिनसे उनके अथाह अध्ययन तथा सरल लेखन शैली का पता चलता है।

लाला जी ने स्वराज्य व स्वदेशी भावना के प्रचार—प्रसार के उद्देश्य से सन १९३६ में 'ग्राम सेवक' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। वह 'ग्राम सेवक' में निर्भीकतापूर्वक विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा ग्रामों के करघे पर बनी खादी का प्रयोग करने, अंग्रेजी की जगह बच्चों को हिन्दी पढ़ाने, धार्मिक व नैतिक संस्कार की शिक्षा देने की प्रेरणा देने वाले लेख प्रकाशित करते थे।

सन १९४२ में लाला जी 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सत्याग्रह करते हुए जेल चले गए तो 'ग्राम सेवक' को बन्द करना पड़ा।

उन्होंने बाद में हिसार से 'कामधेनु' व 'सेवक' नाम से पत्रिकाओं का प्रकाशन व सम्पादन किया।

सन १९५४ में लाला जी ने भारत गो सेवक समाज की ओर से 'गोधन' (मासिक) पत्रिका का प्रकाशन शुरू कराया। वे इसके पहले सम्पादक थे। वे प्रत्येक अंक में सामयिक विषय पर तथ्यों से परिपूर्ण सम्पादकीय लेख लिखा करते थे। 'ग्राम सेवक' में प्रकाशित उनके लेख, आलेख तथा सम्पादकीय टिप्पणियाँ उनके एक मननशील चिंतक व दूरदर्शी सम्पादक होने का ज्वलन्त प्रमाण हैं।

लाला जी की सुविख्यात गोभक्त मनीषी महात्मा रामचन्द्र 'वीर' महाराज के प्रति अनन्य श्रद्धा—भावना थी। सन १९५४ में वीर जी महाराज ने कोलकाता में महाजाति सदन के निकट एक धर्मशाला में गोहत्या एवं पशु बलि के विरुद्ध अनशन किया। इस लम्बे अनशन से पूरे देश में तहलका मच गया था। लाला जी वीर जी के जीवन को दुर्लभ समझते थे। वे कोलकाता पहुँचे। उन्होंने तथा भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार ने वीर जी से प्रार्थना की कि अभी आपको गोरक्षा अभियानों का मार्गदर्शन करना है अतः अनशन त्याग दें। लाला जी के हाथों से सन्तरे का रस ग्रहण कर उन्होंने अनशन त्यागा। अ.भा. कृषि गो सेवा संघ (वाराणसी) के मंत्री श्री किशन काबरा उस समय उपस्थित थे। वे बताते हैं कि कलकत्ता में रहने वाले हरियाणावासियों ने एक समारोह में लाला जी का भव्य अभिनन्दन किया था।

वीर जी महाराज ने भागलपुर व हैदराबाद में गोहत्या बंदी के लिए अनशन किए तो लाला जी वहाँ पहुँचे तथा वीर जी के अनशन को सार्वजनिक रूप से समर्थन किया।

महात्मा वीर के उत्तरा धिकारी आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी द्वारा गोवंश के महत्व पर लिखित पुस्तक 'भारत की आत्मा' की भूमिका लाला जी ने लिखी थी। लाला जी को तथ्यों के साथ पता लगा कि पंजाब व राजस्थान से भारी संख्यामें गाय बैलों की तस्करी कर उन्हें पाकिस्तान के कसाईखानों में भेजा जाता है। इस जानकारी ने उन्हें उद्वेलित कर दिया। लाला जी ने ३१ जुलाई १९५६ को प्रतिनिधिमंडल के साथ राष्ट्रपति भवन जाकर राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से भेंट कर उन्हें गायों की तस्करी कर पाकिस्तान ले जाए जाने तथा देश भर में प्रतिदिन लाखों गायों की हत्या किए जाने की जानकारी दी। प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति से खादी कमीशन की तरह गोरक्षा के लिए अलग से संवैधानिक बोर्ड का गठन कर देश भर में गोहत्या पर रोक लगाने का मार्ग प्रशस्त किए जाने का सुझाव दिया। शिष्टमंडल में सेठ गोविन्ददास (संसद सदस्य), पं. ठाकुरदास भार्गव, सत्गुरु प्रतापसिंह, संत तुकाराव, जे.एन. मानकर तथा आनन्दराज सुराणा थे।

राजेंद्र बाबू लाला जी के त्याग तपस्यामय जीवन से प्रभावित थे। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे गोरक्षा के लिए यथासंभव प्रयास करेंगे। आगे चलकर जब राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद गोभक्ति की भावना से ओतप्रोत हुए भी गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने में सफल नहीं हो पाए तो लाला जी के हृदय को भारी आघात लगा। वह निर्भीकता की मूर्ति थे। वे गोस्वामी तुलसीदास जी के 'जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिए ताहि कोटि वैरी सम जद्यपि परम सनेही' वचन का उद्धरण देते हुए कहा करते थे—'मैं ऐसे किसी भी बड़े से बड़े व्यक्ति को सहज करने को तैयार नहीं हूँ जो भारतीय होते हुए भी गोवंश के विनाश के दौरान मूकदर्शक बनकर पदों का आनंद उठा रहा है। राजेंद्र बाबू यदि वास्तव में गोभक्त हैं तो उन्हें गोरक्षा के प्रश्न पर अविलम्ब राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र दे देना चाहिए।'

राष्ट्रपति को गाय का घी भेजते थे—इस मतभेद के बावजूद डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी से लाला जी का सौहार्द अंत तक बना रहा। लाला जी अपने सहयोगी चौ. रामस्वरूप कागदाना के हाथों अपने गाँव सातरोद से उनके लिए गाय का शुद्ध घी राष्ट्रपति भवन भेजा करते थे।

मेरे पिताश्री भक्त रामशरणदास जी को जिन महापुरुषों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनमें पूज्य लाला जी भी थे। पूज्य लाला जी समय—समय पर पिलखुवा स्थित हमारे निवास स्थान पर पधारने की कृपा करते थे। मुझे वे पुत्रवत स्नेह करते थे। मैं समय—समय पर दिल्ली जाकर उनके दर्शनों व सत्संग से लाभान्वित होता रहता था। मैंने यह अनुभव किया कि लाला जी वास्तव में एक ऐसे सद्गृहस्थ संत थे जिन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र की स्वाधीनता उसकी समृद्धि, लोक कल्याण तथा गोमाता की रक्षा के लिए पूर्णरूपेण समर्पित किया हुआ था। उनकी कथनी व करनी पूरी तरह एक थी। सादगी, सात्विकता, सरलता की वे त्रिमूर्ति थे। उन जैसा विलक्षण महापुरुष दुर्लभ ही होता है।

मिजोरम के रियांग (ब्रु) शरणार्थियों की वापसी समझौते को एक बार फिर खत्म करने के प्रयास

✍ विष्णुकान्त

आगजनी, हत्या और लूटमार के शिकार मिजोरम के ब्रु (रियांग) लोगों को १९९७ में रातोंरात अपना घर छोड़कर पड़ोसी राज्य त्रिपुरा की जामपुई पहाड़ियों में शरण लेनी पड़ी थी। तब से जातीय हिंसा के शिकार इन ३२ हजार से भी अधिक रियांग आदिम–जनजाति समुदाय के ये नागरिक अपने ही देश में गत २२ वर्षों से शरणार्थी बन कर रहने को मजबूर हैं। त्रिपुरा के कंचनपुर के ६ शरणार्थी शिविरों में बसे इन लोगों के राशनपानी की व्यवस्था त्रिपुरा सरकार कर रही है जिसके लिए केंद्र सरकार उसे आर्थिक सहायता कर रही है। वनवासी कल्याण आश्रम भी इनकी चिकित्सा सेवा करने के साथ–साथ इनके बच्चों के लिए प्राथमिक शालाएँ भी चला रही है। इन लोगों की अपने गृह प्रदेश में वापसी के कई प्रयास हुए। देश के सर्वोच्च न्यायालय एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के निर्देशों एवं भारत सरकार के समस्त प्रयासों के बावजूद भी अभी तक के सारे प्रयास विफल सिद्ध हुए। इसी वर्ष ३ जून को दिल्ली में इनकी वापसी के लिए मिजोरम सरकार, त्रिपुरा सरकार एवं रियांग शरणार्थियों के प्रतिनिधियों के बीच एक त्रि–पक्षीय समझौता हुआ। भारत सरकार के गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह और मिजोरम तथा त्रिपुरा राज्यों के मुख्यमंत्रियों की उपस्थिति में हुए इस समझौते के तहत १ से ३० अगस्त के बीच इन लोगों की वापसी तय हुई और एक बार फिर आशा बनी कि ये लोग मिजोरम में अपनी मातृभूमि में फिर लौट सकेंगे। इनके पुनर्वास पैकेज के रूप में लौटने वाले प्रत्येक परिवार को ४ लाख रुपये देना तय हुआ जो मिजोरम में वापसी के एक माह के अन्दर परिवार के मुखिया के नाम स्थाई जमा खाते में जमा होंगे या वे लगातार तीन वर्ष तक मिजोरम में रहेंगे तो यह धनराशि परिवार को दे दी जाएगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक परिवार को आगामी २ वर्षों तक नकद सहायता के रूप में ५ हजार रुपये प्रतिमाह और मुफ्त राशन दिया जाएगा। यह नकद राशि सीधे उसके बैंक खाते में जमा की जाएगी। प्रत्येक परिवार को गृह निर्माण हेतु भी १.५० लाख रुपये तीन किश्तों में दिए जाने है। शिविरों से मिजोरम हेतु मुफ्त परिवहन व्यवस्था मिजोरम सरकार करेगी। समझौत के अंतर्गत उपरोक्त समस्त आर्थिक भार गृह मंत्रालय, भारत सरकार वहन करेगी। यह पैकेज देश में इसी प्रकार के अन्य समझौते के लिए एक आदर्श मॉडल हो सकता है।

समझौते के हस्ताक्षर के समय से ही यह आशंका व्यक्त की जा रही थी कि इससे वे वास्तव में अपनी मातृभूमि लौट पाएंगे।

मिजोरम में इसी वर्ष के अंत में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं। समझौते के अनुसार चुनाव आयोग के निर्देश पर शरणार्थी शिविरों में ही निर्वाचन सम्बन्धी फॉर्म ६, ७, ८ भरवाकर मतदाता सूचियों में संशोधन का कार्य शुरू हुआ जो त्रिपुरा राज्य के मामित जिले के निर्वाचन कर्मचारियों ने किया। उसी समय से इस जिले के यंग मिजो एसोसिएशन (वाईएमए) ने इस प्रक्रिया का विरोध करना शुरू कर दिया।

ये भरे हुए फॉर्म १८ अगस्त को मामित जिला मुख्यालय लाए गए और १९ अगस्त से इनकी जाँच का काम शुरू हो गया।

२३–२४ की मध्यवर्ती रात को मामित जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय में सेंध लगाकर ब्रु शरणार्थियों के भरे हुए मतदाता फॉर्म लूट लिए गए। इस क्षेत्र में १५ सितम्बर से ही धारा १४४ लगी होने व ईवीएम की सुरक्षा को खतरा होने की इंटेलीजेंस रिपोर्ट होने के बावजूद यह सेंधमारी (burglary) हुई। २४ अगस्त को अनजान लोगों के विरुद्ध इस घटना की एफआईआर दर्ज कराई गई। १ सितमबर तक इस अपराध के आरोप में ११ लोगों को हिरासत में लिया गया जिनमें से कुछ लोग जिला निर्वाचन कार्यालय के कर्मचारी बताये जाते हैं। अभी तक कोई साक्ष्य या बरामदगी नहीं हुई।

मीडिया के अनुसार यंग मिजो एसोसिएशन द्वारा आन्दोलन चलाकर मामित के डीसी–कलेक्टर को हटाने की माँग की जा रही थी। समाचार पत्र बताते हैं कि डीसी ने यह कहते हुए इस पर कोई टिप्पणी करने से इंकार कर दिया कि निर्देशानुसार केवल अपनी जिम्मेदारी पूरी कर रहे हैं (चुनाव आयोग/केन्द्र/राज्य सरकार के निर्देशों का पालन कर रहे हैं।)

बताया जाता है कि दिनांक १७ सितम्बर को डीसी को मामित मुख्यालय छोड़कर आइजोल पहुँचने का निर्देश मिला, उसी शाम ६.३० बजे वे आइजोल के लिए अपने सरकारी वाहन में ३ सुरक्षाकर्मियों के साथ निकले। उनके द्वारा रास्ते में डीसी का तलाशने के लिए सभी वाहनों की तलाशी लेने के समाचार मिलने पर सुरक्षा के लिए मार्ग बदल कर इंडियन रिजर्व बटालियन के मुख्यालय में शरण लेते हुए, वहाँ से रातों–रात राज्य के पुलिस मुख्यालय जाकर रात बिताने के बाद १८ सितम्बर को दिन में १०–११ बजे वह आइजोल स्थित अपने घर पहुँच पाया जहाँ उसकी पत्नी रहती है, जिसका २ दिन तक ल्ड द्वारा घेराव कर उसे भयभीत किया जा रहा था।

१९ सितम्बर तक २८ परिवार मिजोरम वापस लौटे हैं। मिजोरम में उनके लिए डर का माहौल बना दिया गया है। रियांग लोग दो पाटों के बीच फंस गए हैं। अगर वे मिजोरम लौटते हैं तो फिर से १९९७ की स्थिति का भय है, दूसरी तरफ केन्द्र सरकार त्रिपुरा के सभी ६ शिविरों के शरणार्थियों कश अनुदान व सहायता १ अक्टूबर से बंद करने जा रही है।

यह सब भारत जैसे एक प्रगतिशील समाज, लोकतान्त्रिक एवं कल्याणकारी देश में हो रहा है। पर दिल्ली या देश की मीडिया में कोई हो–हल्ला नहीं, कोई मोमबत्ती जलाकर मार्च नहीं कर रहा, इसमें किसी को देश में लोकतंत्र या धर्मनिरपेक्षता के लिए कोई खतरा दिखाई नहीं दे रहा। क्या केवल इसलिए कि इन रियांग लोगों में ईसाई व हिन्दू दोनों हैं–केवल अल्पसंख्यक नहीं हैं? यह घटना विश्व–पटल पर तो देश की छवि धूमिल करेगी ही, इसके साथ ही सभ्य, सुसंस्कृत व शिक्षित माने जाने वाले मिजो लोगों के मान–सम्मान पर भी प्रश्नचिह्न लगा रही है। देश में जिसकी साक्षरता सबसे अधिक है। वहाँ के लोगों, विशेषकर वरिष्ठ–बुजुर्गों व युवकों को इस पर विचार करना चाहिए, सर्व–शक्तिमान परमेश्वर सब देख रहा है। क्या वे चाहेंगे कि आने वाले दिनों में मिजोरम का नाम इतिहास में काले पन्नों में लिखा जाए? पर एक बार फिर से रियांग लोगों का अपने घर लौटने का सपना पूरा नहीं होता लग रहा।

हर कोड़े पर वन्देमातरम् गान रामचन्द्र राव देशभक्त महान

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सुदीर्घ अभियान में हैदराबाद में नागरिक अधिकारों की स्वतन्त्रता और दमन के विरुद्ध १९३९ में हुए प्रबल आन्दोलन का संचालन आर्य समाज के इतिहास का एक प्रेरक अध्याय है। इस आन्दोलन से बीच में ही स्वतन्त्रता के लिए अपने अभियान का गौरवगान करने वाले एक प्रमुख संगठन ने बीच में ही किनारा किया था–जबकि वीर सावरकर के आह्वान पर हिन्दू महासभा ने भी हैदराबाद आन्दोलन में सक्रिय योगदान दिया था। इस आन्दोलन में संघ संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार की सहमति से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनेक प्रमुख कार्यकर्ताओं ने हिन्दू महासभा के सत्याग्रही पथकों में सम्मिलित होकर सक्रिय रूप से भाग लिया था। उन दिनों अनेक युवकों के हृदय में ब्रिटिश सत्ता के साथ ही निजाम हैदराबाद की क्रूर सत्ता के विरुद्ध भी विद्रोह की ज्वाला धधक उठी थी। उन्हीं दिनों उस्मानिया विश्वविद्यालय के एक अंग्रेजी अधिकारी ने युवकों द्वारा 'वंदेमातरम्' स्वातन्त्र्य गान की तान छेड़ देने पर आपत्ति व्यक्त करते हुए घोषणा की थी कि–'ऐसा करने वाले युवकों को राजद्रोही करार देकर विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया जाए।' इस घोषणा का विरोध करने पर बी.ए.के छात्र वीर रामचन्द्र राव बन्दी बनाकर चंचलगुडा सेन्ट्रल जेल (हैदराबाद) भेज दिए गए।

श्री रामचन्द्र राव वहाँ धार्मिक संघर्ष समिति के सत्याग्रहियों के साथ कारादण्ड भोग रहे थे। वे प्रातःकाल प्रार्थना के समय सस्वर वंदेमातरम् का गान करते थे। उनके इस आचरण की शिकायत हैदराबाद के कारागार निदेशक जनरल हालेन्स तक पहुँची तो एक दिन वह स्वयं इस बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कारागार पहुँचा। श्री रामचन्द्र राव को उसके समक्ष पेश किया गया। जनरल हालेन्स ने सहसा श्री राव के गाल पर एक तमाचा तो मारा ही साथ ही अपनी पिस्तौल उन पर तानते हुए क्रोध से दग्ध होकर उन्हें यह धमकी भी दी कि–'यदि भविष्य में कारागार में वंदेमातरम् गायन का प्रयास किया तो तुम्हें गोली से उड़ा दिया जाएगा।' रामचन्द्र राव और उनके वीर सहयोगी इस धमकी से

शेष पृष्ठ 11 पर

हिंदुत्व के मूल तत्वों को पहचानो

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

हिंदुत्व के मूल तत्व और सिद्धांतों की अवहेलना करके वर्षो से राष्ट्रीय हितों को आहत किया जाना प्रायः सामान्य हो गया है। देश की प्राचीन संस्कृति व सभ्यता और अपने ही प्रेरणाप्रद व आदर्श महापुरुषों के विरुद्ध नकारात्मक वातावरण बनाना प्रगतिशीलता बनता जा रहा है। जबकि ऐसे अन्यायों के विरुद्ध हिंदुओं के आक्रोशित होने को अनुचित माना जाता है। लेकिन हमारा धर्म ऐसे

अन्याय सहने को भी पाप कर्म ही मानता है।

क्या किसी षडयंत्र के अंतर्गत केवल अहिंसा व सहिष्णुता आदि सहृदयता का पाठ हमको व हमारे पिता, दादा, पितामाह आदि पूर्वजों को शताब्दियों से पढ़ाया जाता रहा। वास्तव में मुगल काल के आरंभ से ही धीरे धीरे हिंदुओं को साधारणतः सहिष्णुता, अहिसंक, उदारता व अतिथि देवो भवः आदि विशेष का पाठ पढ़ाया गया। यहाँ तक कुछ अनुचित नहीं था। परंतु हम अपने स्वाभिमान को खोकर और अपने *अस्तित्व को संकट में डाल* कर इन सदगुणों को ढोते रहें तो क्या यह न्यायसंगत कहलाया जा सकता है? हम अपनी आस्थाओं के प्रतीकों, मंदिर–मठों और तीर्थ स्थलों के साथ साथ देवी–देवताओं के मान–अपमान के प्रति भी सजग व सतर्क न रहें तो ये हमारी कैसी सहिष्णुता थी? जब हम अपने ऋषि–मुनियों और आचार्यो के ज्ञान–विज्ञान को भी सुरक्षित न रख सके और अपनी प्राचीन धरोहरों को ध्वस्त होते देखते रहे तो क्या ऐसे में अहिंसात्मक बने रहना उचित था? जब हमारी अरबों–खरबों की सम्पदा को लूटा जाता रहा और लाखों–करोड़ों हिंदुओं का बलात धर्मांतरण और नरसंहार किया जाता रहा तो भी हम भीरु और कायर बन कर सर्वधर्म समभाव से जुड़े रहे, क्यों? क्या यह सत्य नहीं है कि इस प्रकार अत्याचारी व अमानवीय कृत्यों द्वारा शताब्दियों से हिन्दू जनमानस का मनोबल तोड़ा जाता रहा? विभिन्न आलोचकों के पक्ष–विपक्ष में विचार हो सकते हैं, परंतु इतिहास साक्षी है और प्रमाणस्वरुप सन् ७१२ के बाद मुगल व ब्रिटिश शासकों द्वारा हमारे सांस्कृतिक गौरव के पतन की आक्रोशित करने वाली गाथा का व्यापक ऐतिहासिक वृतांत सर्वविदित है। इसको झुठलाया नहीं जा सकता। हमें अपनी *दासता और पतन का विस्तृत* इतिहास पढ़ाया गया। हमारे इस इतिहास ने हमको दासता की मनोवृत्ति से बाहर नहीं निकलने दिया। हम उदार व सहिष्णु बने रहे परंतु उसके साथ ही कायरता और संघर्षहीनता आदि के अवगुणों से ग्रस्त होते गये। अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण हो या गौरक्षा का प्रश्न हो, विरोध करने वालो की संख्या अभी भी कम नहीं है। वरिष्ठ लेखक व राष्ट्रवादी विचारक स्व. भानुप्रताप शुक्ल के वर्षो पूर्व प्रकाशित हुए एक लेख के अनुसार देशवासियों का एक वर्ग दूसरे वर्ग पर, एक जमात दूसरी जमात पर, एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के ऊपर आक्रमण करे, हिंसा, हत्या, लूट और आगजनी करे, बलात्कार और अपहरण करे या करने का प्रयास करे या करने लग जाये तो पीड़ित समाज क्या करे? अपना घर जलने दें, अपनी बहुबेटियों के साथ बलात्कार करने दें? उन्हें आमंत्रित करें कि आप हमारा घर फूकियें, हमारा घर लूटिये और हमारी ललनाओं को ले जाईये? अपनी खुशी के लिये आप जो चाहें करें हम कुछ नहीं कहेंगे। वास्तव में स्व. शुक्ल जी के मन में इन जिहादियों के विरुद्ध कितना आक्रोश व हिंदुओं की विवशता के लिये कितनी अधिक पीड़ा थी जो उन्होंने इतने अधिक स्पष्ट शब्दों से इस कटु सत्य को हृदय स्पर्शी बना दिया था। याद रखो जब देश और समाज में अनाचार व दुराचार के विरुद्ध क्रोध भर जाता है तो वहाँ किसी चाणक्य को कुशासन के विरुद्ध शिखा खोलनी पड़ती है, क्योंकि धर्मरक्षा व राष्ट्र रक्षा का प्रश्न सर्वोपरि होता है।

निसंदेह हमने अपने स्वर्ण युग और गौरान्वित करने वाले इतिहास को भुला दिया। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इतिहास के उन प्रेरणादायी अध्यायों व ग्रंथों के ज्ञान का हमें सानिध्य भी न मिल सका। हम वसुधैव कुटुम्बकम को मानने वाले हैं तो शस्त्रमेव जयते के उदघोषक व शास्त्र एवं शस्त्र के पुजारी भी हैं। हम अश्वमेघ यज्ञ के लिए विजय रथ पर सवारी करने वाले महान योद्धाओं के वंशज होते हुए भी केवल सम्राट अशोक के कलिंग युद्ध के बाद उनके अहिंसात्मक प्रेम के प्रति आकर्षित हो गये, क्यों? हमने अपने धर्म के मूल ग्रंथों वेद, उपनिषद, रामायण व महाभारत आदि के ज्ञान व सिद्धान्तों को आत्मसात नहीं किया बल्कि तथाकथित धर्माचार्यो व कथावाचकों से प्रभावित होकर उनके अनुसार धर्म के पालन को ही धर्म मान लिया। ऐसी विपरीत व्यवस्था ने भी हिंदुओं के आत्मस्वाभिमान को धूमिल ही किया। इसीलिए ऐसा प्रतीत होता है कि देश के नीति नियन्ताओं ने हिंदुत्व की विराटता के मूल तत्वों का अध्ययन नहीं किया और तथाकथित बुद्धिजीवियों और धर्माचार्यो की भाँति केवल उदारता, भीरुता व अहिंसावादी आदि बनें रहने का ही नकारात्मक पक्ष रखा है। जबकि अन्य धर्मावलंबियों ने हिंदुत्व के विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है तो भारत की गौरवशाली संस्कृति की रक्षार्थ प्रखर हिंदुत्व को रौद्र रुप धारण करने की निरंतर आवश्यकता बनी हुई है। हिंदुत्व के मूल तत्व और सिद्धान्त भी इसको उचित मानते हैं। हमारे तथाकथित बुद्धिजीवियों को भी हिन्दू अस्मिता को स्वीकारना होगा साथ ही रामायण व महाभारत आदि महाकाव्यों को कपोल–कल्पित (मिथ्या) कहने वालो को इनकी सत्यता को समझना होगा। इन दिग्भ्रमित बुद्धिजीवियों को आक्रांताओं के दमनकारी इतिहास के अतिरिक्त राष्ट्र के स्वर्णिम काल व प्रेरणादायी इतिहास के अध्यायों का अध्ययन भी करना होगा? प्रमुख समाजवादी नेता स्व. डॉ० राममनोहर लोहिया से एक बार प्रश्न किया गया था कि हिंदुस्तान क्यों इतनी बार गुलाम हुआ? इस पर उनका कहना था कि हम दूब घास की तरह झुक जाते हैं, बहुत दबते हैं, हर स्थिति में समझौता करके आत्मसमर्पण कर देते हैं। उन्होंने उपाय दिया कि आत्मसमर्पण की मनोवृति को खत्म करना सीखें और यह तभी होगा जब हिन्दू धर्म की तेजस्विता को हिन्दू प्रकट करने का प्रयास करेंगे। इसलिये यह कहना अनुचित

शेष पृष्ठ 11 पर

संत वाणी

❖ मन रूपी मन्दिर में जो नाना प्रकार की इच्छाएं नाच रही थीं, वे घर के दीपक से (आत्मानुभव से) सब जल गई, अर्थात् अपने अन्दर ज्ञान अग्नि ऐस प्रज्जवलित हुई कि सब प्रकार के संकल्प जल गये थे तथा रौंगटे खड़े हो गये। **स्वामी रामतीर्थ**

❖ श्री राम भजन और धर्म करने में तनिक भी विलम्ब मत करो, जो कल करना हो उसे आज ही कर डालो जिससे कल प्रसन्नता और उत्साह रहे। मन को सदा काबू में रखो। निश्चय समझो–यह मन महा धूर्त है। **स्वामी युगलानन्यशरण जी**

❖ भगवान में अनन्य भक्ति होने पर ही साधना आगे बढ़ती है। शरणागति का मर्म पूर्ण आत्म समर्पण है। बिना प्रभु प्रेम के सब साधन ऊपर भूमि में वर्षा के समान व्यर्थ हो जाते हैं। निष्काम भावना अत्यन्त दृढ़ होनी चाहिये। **श्रीरामबल्लभशरण जी**

❖ यदि तुम ज्ञान की प्राप्ति करना चाहते हो तो आवश्यकता इस बात की है कि देश, जाति तथा शरीर की आसक्ति को अलग करो। **उडिया स्वामी जी महाराज**

❖ अपने को बदल डालने के लिये 'रामनाम' से अधिक प्रभावशाली और अनुभूत दवा मैं नहीं जानता हूं। इस पर जितना कोई निर्भर करेगा, जितना अधिक जप करेगा, उतने ही शीघ्र अपने में उसे परिवर्तन का अनुभव होगा। **संत रामानन्द जी**

❖ यदि हमारे अन्दर सच्ची श्रद्धा है, यदि हमारा हृदय वास्तव में प्रार्थनाशील है तो हम ईश्वर को प्रलोभन नहीं देंगे, उसके साथ शर्तें नहीं रखेंगे। हमें उसके आगे अपने को शून्य–नगण्य–कर देना होगा। **महात्मा गांधी जी**

शहीद महावीर सिंह का पत्र अपने पिता जी के नाम

✍ आकाश फरलिया

पोर्ट ब्लेयर अंडमान,

परम पूज्य पिताजी,

आपको पढ़कर आश्चर्य होगा कि उपरोक्त स्थान पर मैं कब आ गया। यही पहेली हल करने मैं जा रहा हूँ। तारीख १६ जनवरी को प्रातः काल लगभग ११ बजे जेलर साहब सेंट्रल जेल बिलारी आये और कोठरी का दरवाजा खोलेकर सूचना दी कि तुम्हारा ट्रांसफर है, पर यह नहीं बताया कि कहाँ को है। पूछने पर केवल इतना कहा कि शायद पंजाब में नये लाहौर साजिश केस में गवाही देने के लिए मद्रास भेजे जाओगे। अस्तु, १६ तारीख की शाम को जब मैंने सेंट्रल जेल मद्रास में पैर रखा तो मेरे जीवन–मरण के साथी श्रीयुत भाई कमलनाथ तिवारी के दर्शन–लगभग दो वर्ष बाद हुए और रात को भाई बी. के . दत्त और भाई कुंदनलाल जी की आवाजें सुनीं। आप स्वयं ही जान सकते हैं कि मुझे कितनी प्रसन्नता हुई होगी। परन्तु अलस्सुबह फिर कुछ निराशा की झलक नजर आयी जब देखा कि तिवारी और भाई दत्त और कुन्दनलाल हमसे पहले पृथक ले जाये गये हैं, परन्तु १५ मिनट बाद वह फिर हर्ष में बदल गयी और मोटर लॉरी में हम फिर मिल गये। बहुत दिनों का वियोग मिट गया। उस समय तक हम मन की खिचड़ी पका रहे थे और मिलने के आनन्द में विहवल थे, परन्तु यह पता नहीं था कि कहाँ जा रहे हैं। सोचते थे शायद पंजाब जावें, बाद में यहाँ आवें। परन्तु हमारी लॉरी बन्दरगाह पर पहुँची और विख्यात 'महाराजा' जहाज के दर्शन हुए। उस समय समझा कि हम लोग अंडमान अर्थात् 'काला पानी' जा रहे हैं। मातृभूमि से तथा बन्धु वर्ग से सदैव के लिए अथवा कम से कम १८ साल के लिए पृथक हो रहे हैं। जिस जननी की गोद में पले हैं और धूलि में लोटे हैं उसके दर्शन से भी वंचित हो रहे हैं। आप लोगों के पदारविन्द की रज से सदैव के लिए दूर हो रहे हैं। ऐसी दशा में प्यारे देश को छोड़ते हुए हृदय में कितना ही कष्ट हुआ परन्तु साथ ही प्रसन्नता भी हुई, जोकि इसके सम्मुख कुछ अधिक ही थी। वह थी एक क्रान्तिकारी जेल की दर्शनाभिलाषी–पुण्य तीर्थ स्थान की, जिसको भाई रामरक्खा मल ने अपनी समाधि बनाकर पवित्र किया है और दूसरे बंगाली तथा सिक्ख वीरों की तोपभूमि रही है। और साथ ही आशा थी कि हमारे जीवन के बन्धुगण सर्वदा साथ रहेंगे और भी अनेक अपने कंधे–से कन्धा सटाने वाले भाइयों के दर्शन होंगे। अस्तु, २३ जनवरी की संध्या को विस्तृत नील गम्भीर जल–राशि की ८५० मील से अधिक लम्बी यात्रा करके हम पोर्ट ब्लेयर की जेल में पहुँचे जहाँ पर अपने वर्तमान साथियों को मिलने के लिए अति उत्कंठित पाया। उनकी भी वैसी भी दशा हो रही थी जैसी हमारी थी। यहाँ सम्प्रति लगभग ४० बी. क्लास के तथा २४ सी क्लास के राजनैतिक कैदी हैं और कुछ लोगों की निकट भविष्य में आने की आशा भी करते हैं।

हमारी जेल तिमंजिला है और पास ही कुछ गजों के फासले पर नीलास्व (जल) राशि गम्भीर गर्जन के साथ किनारे से टक्करें मारती है, जो ऊपर से दिख पड़ती है। यह द्वीप समूह जंगलों से भरा सुना जाता है जिसमें केवल नंगे रहने वाले असभ्य लोग रहते हैं, परंतु खुली हुई जगहों में कुछ भारतीय लोग भी बस गये हैं, जिनकी भाषा हिन्दुस्तानी है। इन लोगों में से बहुत–से कैदी हैं, कुछ सरकारी नौकर हैं और कुछ तिजारती लोग भी हैं। अभी हाल में तो जेलवालों का कुछ ठीक–ठाक हाल मालूम होता है, लेकिन आगे की कह नहीं सकते। हमारे पुराने साथियों में अभी हमारे साथ डॉ. गयाप्रसाद, मि. बि. के. दत्त, भाई कुंदनलाल जी तथा कमलनाथ तिवारी हैं। बाकी तीन साथी मद्रास सूबे में होंगे जो कि शायद अभी भी हंगर स्ट्रायक पर हैं। हमारे साथियों में ३/४ से अधिक संख्या बंगाल प्रदेश वालों की है।

पूज्यवर, शायद आप चिंतित होंगे कि मैंने इतने दिनों से पत्र क्यों नहीं लिखा। इसका कारण थी घनघोर घटाएँ जो चारों और मंडरा रही थीं। तनिक भी शान्ति का अवसर नहीं देती थीं। इसी कारण मैंने उनमें फंसकर पत्र लिखने का सुयोग न पाया।

अब यह बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूँ, जिससे आप शांति–लाभ करेंगे। परन्तु पिताजी, आप शांति हर दशा में रखें क्योंकि आप जानते हैं कि हमें कष्टों में आनन्द और सुख मालूम होता है। अब कुछ इस कारागार में वास करके तथा अपने ध्येय को सम्मुख रखते हुए कष्ट भी सुख भी प्रतीत होता है और यही है हमारा जीवन और जहाँ ये बातें इसमें नहीं रहीं तो समझिए कि हम मर गये। इसलिए आप या हमारी पूज्य बुआ जी तथा माताजी इस बात का ध्यान रखते हुए कभी कोई चिंता न करें और सर्वदा शांतिपूर्वक आनन्दित रहें।

प्यारे भाई का क्या हाल है, इसकी सूचना मुझे शीघ्र दीजिएगा। उसे केवल वैद्य ही बनने का उपदेश न देना, बल्कि साथ–ही–साथ मनुष्य बनना भी बतलाना। आजकल मनुष्य वही हो सकता है जिसे वर्तमान वातावरण का ज्ञान हो, जो मनुष्य के कर्तव्य को जानता ही न हो परन्तु उसका पालन भी करता हो। इसलिए समाज की धरोहर को आलस्य तथा आरामतलबी तथा स्वार्थपरता में डालकर समाज के सामने कृतघ्न न साबित हो। तथा शारीरिक तथा मानसिक दोनों ही प्रकार की उन्नति करता रहे, क्योंकि दोनों ही आवश्यक हैं। शारीरिक पुष्टि अन्न तथा व्यायाम से तथा मानसिक अध्ययन से। उसे आजकल के वातावरण का ज्ञान करने के लिए समाचार पत्र तथा ऐतिहासिक शेष पृष्ठ 11 पर

बालकृष्ण शिवराम मुंजे

डा. बालकृष्ण मुंजे एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। गांधी जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति से असहमत होने के कारण डा. मुंजे कांग्रेस से अलग हो गए और उनकी गिनती हिन्दू महासभा के तेजस्वी नेताओं में होने लगी। १६३० और १६३१ के गोलमेज सम्मेलन में वे हिन्दूसभा के प्रतिनिध के रूप में गए थे तथा गांधी जी केवल १६३१ के सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में!..... डा. मुंजे १६२७–२८ में अखिल भारत हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रहे। आरएसएस को बनवाने में भी इनका बहुत योगदान रहा था और ये डॉ हेडगेवार के राजनीतिक के राजनीतिक गुरु भी थे। मुंजे भारत में "सैनिक शिक्षा" के पुरोधा थे मुंजे लोक मान्य तिलक के अनुयायी थे। लोकमान्य तिलक बहुत दूरदर्शी थे। तब तक सेना में भारतीय युवकों की भर्ती केवल साधारण सिपाही के लिए ही की जाती थी। अधिकारी अंग्रेज ही होते थे। इसलिए सेना पर पूरी पकड़ अंग्रेजों की थी। सेना के ही बल पर अंग्रेजों ने हमें गुलाम बना रखा था। तिलक जी की सोच थी कि सेना में भारतीय अधिकारियों के भी होने पर अंग्रेजों की पकड़ ढ़ीली पड़ती जाएगी। इसके साथा ही उनका यह भी विचार था कि देर सबेर अंग्रेजों को यहां से जाना ही पड़ेगा। उस समय अंग्रेज अधिकारियों का स्थान लेने के लिए यदि पहले से ही भारतीय अधिकारियों का संवर्ग मौजूद नहीं होगा तो इस प्रकार की अधिकारी विहीन सेना तो उलटे अराजकता फैलाएगी और देश पुनः गुलाम हो जाएगा पर गांधीजी को तिलकजी की यह बात उस समय समझ नहीं आई थी।

लोकमान्य तिलक के इसी सूत्र को आगे बढ़ाते हुए डा. मुंजे ने भारतीय युवकों के लिए एक सैनिक विद्यालय खोलने का विचर किया। गोलमेज सम्मेलन में भी उन्होंने प्रबल मांग रखी कि भारतीय सेना का भारतीयकरण करने के लिए भारत के युवकों का सैनिक प्रशिक्षण नितान्त आवश्यक है। विद्यालय के विचार को मूर्तरूप देने से पूर्व पहले से चल रहे किसी सैनिक विद्यालय के स्वरूप और उसकी संरचना को समझना आवश्यक था। पर भारत में कोई ऐसा विद्यालय था नहीं। उन्हें पता लगा कि इटली में ऐसा विद्यालय है। अतः गोलमेज सम्मेलन से वापस आते हुए वे इटली में रुके।...इटली में डा. मुंजे मुसोलिनी से मिले और उनका सैनिक विद्यालय देखने की इच्छा प्रकट की। मुसोलिनी ने पूछा आप यहां और क्या–क्या देखना चाहेंगे। डा. मुंजे के कहा, कुछ नहीं, केवल सैनिक विद्यालय!...मुसोलिनी को बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला.... 'लोग तो यहां के विभिन्न दर्शनीय स्थल देखने आते हैं और आप केवल एक विद्यालय??...'

डा. मुंजे ने उत्तर दिया हां मेरे देश को इसी की जरूरत है।... इसके सात वर्ष बाद सन् १६३७ में डा. मुंजे ने नासिक में भोंसला मिलिटरी स्कूल की स्थापना की जो आज भी चल रहा है और देश के अनेक सैन्य अधिकारी इस विद्यालय की उपज हैं। स्पष्ट है कि डा. मुंजे इटली के किसी युवा संगठन की कार्यप्रणाली का अध्ययन करने नहीं अपितु वहां के सैनिक विद्यालय का अध्ययन करने गए थे। जहां तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रश्न है, इसकी स्थापना गोलमेज सम्मेलनों से भी पांच–छह वर्ष पूर्व सन् १६२५ में डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने की थी,...डा. मुंजे ने नहीं! गोलमेज सम्मेलनों तक तो संघ की लगभग साठ शाखाएं हो चुकी थीं। ये प्रायः मध्यप्रान्त और विदर्भ में थीं तथा उत्तर प्रदेश में काशी में भी शुरू हो चुकी थीं। समझने की बात यह है कि भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन जिस शक्ति के विरुद्ध चलाया जा रहा था। उसका लगभग आधे विश्व पर आधिपत्य था। हमारे अग्रणी नेता यह अच्छी तरह जानते थे कि केवल अपने ही देश में आन्दोलन चलाकर उस शक्ति को भारत से चले जाने को बाध्य नहीं किया जा सकता।

होली का आनन्द उठायें, मगर सम्भलकर

• डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम •

पर्व कोई भी हो वह अपने साथ प्रसन्नता तथा उमंग लेकर आता है। होली एक ऐसा ही उत्सव है, जो लोगों के दिलों में प्रेम भाव तथा रंग भर देता है। होली के रंगों में भला कौन नहीं सराबोर हो जाना चाहता! किन्तु क्या आप जानते हैं कि ये रंग आपकी त्वचा को हानि भी पहुंचा सकते हैं। यदि आप रंग खेलने से पूर्व कुछ सतर्कता बरतें तथा

सही रंगों का चुनाव करें, तो त्वचा के प्रभावित होने से बच सकते हैं। **होली मन की कलुषता को धोकर रिश्तों में नया जोश भरने वाली इन्द्रधनुषी पर्व है। अगर इसकी सुखद भावना को ख्याल में रखकर इस पर्व का स्वागत किया जाए तथा इस भावना के साथ दूसरे को रंग या गुलाल लगाया जाए कि उसके साथ स्नेह और रिश्ते मजबूत हो सकें तो होली से ज्यादा शानदार, खुशनुमा दूसरा कोई पर्व नहीं।** ऐसा नहीं कि रंग डालना या गुलाल लगाना कोई अशोभनीय बात है। लेकिन यदि मन की दमित इच्छाएं होली के माध्यम से पूरी करने का इरादा रखा जाए तो सचमुच गलत है। होली सदा इस तरह से मनानी चाहिए कि किसी को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो और सभी प्रसन्न होकर पर्व का पूरा आनन्द उठा सकें। होली के दिन अच्छे कपड़ों की जगह इस्तेमाल न आने वाले कपड़े ही धारण करें। अच्छा होगा कि आप गहरे रंग के कपड़े धारण करें। इन दिनों रंगों के पेष्ट यानी गाढे धुले रंगों का प्रचलन प्रारम्भ हो गया है, जिसे हाथ में मलिए तथा दूसरे का चेहरा पोत डालिए। यह रेडिमेड पुताई महिलाओं विशेषतौर से युवतियों में काफी लोकप्रिय है। **होली के अवसर पर दो प्यार भरे हाथ आपका चेहरा सहलाएं तो कोई विरोध नहीं, मगर इन हाथों पर यदि रेडीमेड रंग लगा हो तो बचिए। आजकल के फैशन में महिलाएं अपने हाथों के नाखून बढ़ाए रखती है। होली के उंगलियों का सही सौन्दर्य हथियार बनकर आँखों तथा चेहरे को घायल करता है। अगर आपको कोई रंग लगा रहा है तो चेहरे पर रंग लगवाने से बचें, किन्तु यदि ऐसा न हो पाए तो अपनी आँखे तथा मुंह भली-भाँति बन्द कर लें, जिससे रंग आपकी आँखों तथा स्वास्थ्य को कोई नकुसान न पहुंचाएं आँखों की सुरक्षा के लिए धूप का चश्मा पहनें।** मिलावटी व घटिया किस्म के रंग त्वचा तथा बालों पर प्रतिकूल असर डालते हैं। इसलिए होली खेलने से पूर्व त्वचा पर वैसलीन अथवा कोई अच्छी कोल्ड क्रीम लगा लें। बाला में तेल लगाकर सिर पर टोपी, तौलिया, साड़ी टुपट्टा आदि रख लेना चाहिए। ऐसा करने से पक्के तथा घटिया रंगों का असर प्रत्यक्ष बालों पर नहीं पड़ेगा, प्रयास यही करें कि जैसे ही कोई सूखा रंग आप पर डाले आप उसे साफ कपड़े से झाड़ दें बार–बार मुंह जल से न धोयें। दूसरे जो रंग लगा रहे है, उस पर आपका अंकुश भले न हो।, किन्तु आप खुद हर्बल रंग ही प्रयोग करने का प्रयास करें। **अगर जल की होली खेलने का मन है तो महकदार हर्बल रंग गरम जल में तैयार करें। जिनके ऊपर यह खुशबूदार गुनगुना रंगीन जल गिरेगा, वे आपकी होली को भूल नहीं पाएंगे।** रंग लगे चेहरे पर साबुन का इस्तेमाल न करे। इससे त्वचा और रूखी हो जाएगी। **रंग छुड़ाने के लिए हरदम बेसन तथा दूध का मिश्रण तैयार कर उससे त्वचा कीसफाई करें।** कार मे यात्रा करते वक्त उसकी खिड़कियाँ बन्द कर लें। होली वाले दिन सोने–चाँदी या बहुमूल्य धातु के आभूषण न पहनें।

प्राचीन भारत में होलिकोत्सव

• डॉ. हरिसिंह पाल •

भारत एक उत्सवप्रिय देश है। इसीलिए अनादिकाल से प्रत्येक ऋतु में एक न एक उत्सव मनाने की परम्परा यहाँ चली आ रही है, किन्तु वसन्त ऋतु में तो उत्सवों का चरमोत्कर्ष मिलता है। समाज के स्वस्थ जीवन के लिए व्यक्ति की दिनचर्या में विनोद, हास और उल्लास के लिए भी कुछ क्षण आवश्यक हैं। एक वैदिक मन्त्र है –

सूनृतावन्तः सुभगा इरावन्तो हसामुदाः।
अतृष्या अक्षुध्या गृहा मास्मद् बिभीतन।। (अर्थववेद 7-60-6)

जिन घरों में रहने वाले परस्पर मधुर और शिष्ट संभाषण करते हैं जिनमें सब तरह का सौभाग्य निवास करता है, जो प्रीति–भोजों से संयुक्त है, सभी हास और उल्लासमय जीवन–व्यापन करते हैं एव जहाँ न कोई भूखा है न प्यासा, उन घरों में कही से भय का संचार न हो। हमारी संस्कृति में 'होली' का उत्सव तामसिक वृत्तियों के मुखर होने हेतु नियत किया गया है। इस दिन हमारी मर्यादित प्रकृति भी उन्मुक्त हो जाती है। आमोद–प्रमोद निर्बन्ध हो जाते हैं। उत्सव की इस सम्मोहनी शक्ति को हमारे द्रष्टा महर्षियों नेसमझा था। उन्होंने यज्ञों म वसन्त को आज्य कहकर घोषित किया था

यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्मः इध्मः शरद्धवि।। (ऋग्वेद 10-90-6)

इन्हीं महर्षियों ने वसन्त माधुरी की मधुमयता से आनन्द विभोर हो मधुमास से अपने नववर्ष का प्रारम्भ करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना के रूप में कहा था –

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्न सन्त्वोषधी मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधुद्योरस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पति मधुमा अस्तसूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
(यजुर्वेद)।

हमारे लिए वायु मधु बनकर बहे, नदियाँ मधु–क्षरण करें, औषधियाँ मधुमयी हों। अर्थात् भूमि का कण–कण आकाश, वनस्पतियाँ, सूर्य और हमारी गाएं सभी मधुमय हों। होली या वसन्तोत्सव का जो वर्तमान स्वरूप दिखाई पड़ता है यह हजारों वर्ष पुराना है। भारतवर्ष के पूर्व भाग में जो अनेक प्रकार की उद्यान–क्रीड़ाएं प्राचीनकाल में प्रचलित थी, वे इसी होली पर्व का ही एक अंग थी। पाणिनि का 'प्राचांक्रीणाया' (6, 2, 72) सूत्र इनका परिचायक हैं 'वात्स्यायन' ने उन्हें पेश परम्परागत क्रीड़ाए कहा है। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिन हालिकाष्टक नामक पर्व मनाया जाता था। होलिकोत्सव का वर्णन भविष्योत्तर पुराण में इस प्रकार किया गया है

अयं पंचदशी शुक्ला फाल्गुणस्य नाक्शाचित।
शीतकालान्त सम्प्राप्तो प्रातर्मधु भविष्यति।।
नाना रंगमर्यवस्त्रैः चन्दना गुरू मिश्रितैः।
अबीरं च गुलालं च मुखे ताम्बूलभक्षणम्।।
जल्पन्तु स्वेच्छवा सर्वे निशंका यस्य यन्मतम्।
तेन शब्देन स पापा होमेन च निराकृता।।

राजन्! शीतकाल का अन्त है। इस फाल्गुनी पूर्णिमा के पश्चात् प्रातः मधुमास होगा। सभी को आप अभय दीजिए, सभी रंग बिरंगे वस्त्र पहनकर चन्दन, अबीर और गुलाल लगाकर पान चबाते हुए एक–दूसरे पर रंग डालने के लिए पिचकारियाँ लेकर निकले। जिनके मन में जो आए सो कहें। ऐसे शब्दों से तथा हवन करने से वह पापिनी (होलिका) नष्ट हो जाती है। चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को सूर्योदय के पश्चात् नित्य नियम से निवृत्त हो तर्पणादि कर होलिका की विभूति को धारण किया जाता था। विभूति स्वयं लगाकर एक दूसरे को लगाते–लगाते विनोद में एक–दूसरे पर उछालना आरम्भ हुआ होगा। बहुत बाद में धूल, गोबर, कीचड़ आदि उठालने की प्रथा चली होगी। इसी दिन श्वपच को गले लगाने का विधान भी था। युधिष्ठिर के 'राजसूय' या की समाप्ति पर यज्ञान्त स्नान का श्रीमद्भागवत (10-75-14,18) होली पर शिष्ट हास–परिहास, स्वस्थ मनोरंजन, साहित्य कला का विभिन्न विधियों से प्रदर्शन करना अपनी सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहित करना है। इस मंगलमय त्यौहार पर कुछ लोग शराब पीकर भांग आदि के नशे शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

अपने ही देश में हिन्दुओं का दमन

1. हिन्दुओं के प्रमुख मन्दिरों से होने वाली आय को मदरसों और चर्चो को दे दिया जाता है, ऐसा अन्याय विश्व में कहीं नहीं होता।

2. स्वाधीनता के पश्चात से हिन्दुओं की जनसंख्या प्रतिशत में तेजी के साथ गिरावट आ रही है, यह गम्भीर चिन्ता का विषय है।

3. भारतीय संविधान में हिन्दुओं को धार्मिक शिक्षा पर प्रतिबन्धित कर दिया गया है जबकि अन्य पंथों को शासन के अनुदान से धार्मिक शिक्षा दी जाती है। यह सीधेतौर पर मानवाधिकारों का हनन है। साथ ही किसी संस्कृति को नष्ट करने का संवैधानिक प्रयास है।

4. हिन्दू विरोधी पाठ्यक्रम युवाओं को पढ़ाया जाता है, ताकि वे अपने मूल संस्कारों से घृणा करने लगें।

5. वैदिक व्यवस्था में जातिवाद नाम की कोई चीज नहीं थी। फिर भी हिन्दू समाज में घृणा पैदा करने के लिये प्रक्षिप्त अंशों को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

6. बौध या जैन मत के किसी भी ग्रन्थ में यह नहीं आया कि वे हिन्दू धर्म के विरोधी हैं। उस समय हिन्दू संज्ञा का प्रयोग होता ही नहीं था। हिन्दू शब्द भौगोलिक शब्द है जिसका प्रयोग मध्य एशिया के लोग भारतीय आध्यात्मिक धारा के अनुयायियों के लिये करते थे लेकिन भारतीय आध्यात्मिक धारा की एकता को भंग करने के लिये यह शब्द सनातनी समाज के लियें किया जाये लगा। साथ ही यह बताया जाने लगा कि बौध, जैन और सिक्ख पंथों की स्थापना हिन्दू धर्म के दोषों के कारण हुई। विराट हिन्दुत्व की शक्ति को कम करने और हिन्दुओं में हीनग्रंथि विकसित करने के लिये यह एक घातक साजिश रची गई।

सावधान ! आपका देश और धर्म आपसे छीना जा रहा है।

हम है आपके साथ

अखिल भारत हिन्दू महासभा

शेष पृष्ठ 1 का **कुंभ मेले का.....**

लोगों ने स्नान किया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कुंभ में भाग लेने वाले सभी श्रद्धालुओं को बधाई देते हुए आस्था और श्रद्धा को नमन किया है। महाशिवरात्रि स्नान के लिए यहां ४१ घाटों पर व्यवस्था की गई थी। पुलवामा हमला और एयर स्ट्राइक के बाद कुंभ मेले की सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। १५ जनवरी से शुरू हुए कुंभ में तीन मार्च तक २२.६५ करोड़ लोग स्नान कर चुके हैं। मेला क्षेत्र में यातायात सुव्यवस्थित रखने के लिए अंतिम दिन रात १२ बजे से वाहनों का प्रवेश मेला क्षेत्र में प्रतिबंधित कर दिया गया था। लोगों को केवल १४,१५ और १६ नंबर पांटून पुल से आने की अनुमति थी। मेले के दौरान खोया–पाया केंद्र में कुल २६ हजार ३३७ लोग गुमशुदा पंजीकृत हुए, जिसमें १५ हजार ७३० महिलाएं थीं। ७६२ लोगों को छोड़कर बाकी लोगों को उनके परिजनों से मिला दिया गया। इन ७६२ लोगों के परिजनों से अभी तक संपर्क नहीं हो सका है। महाशिवरात्रि पर मेला प्रशासन ने शिव मंदिरों में दर्शन की विशेष व्यवस्था की थी, क्योंकि इस दिन शिवलिंग का रुद्राभिषेक भी किया जाता है।

शेष पृष्ठ 9 का **प्राचीन भारत में.....**

करके, एक दूसरे को गाली–गलौज देकर, महिलाओं से अभद्र व्यवहार करके या अश्लील हरकतों से इसी गरिमा को घटाने का कुप्रयास करते हैं। इस त्यौहार की गौरवमयी परम्परा को कायम रखते हुए होली की परिवत्रता व गरिमा का ध्यान रखना आवश्यक है। होली प्रेम तथा मंगल मिलन का त्यौहार है। सुगन्धित फूलों व अच्छे फीके रंगों द्वारा इसे अपनत्व एवं सहृदयतापूर्वक मनाना चाहिए।

होली के उद्देश्य और शिक्षा

होलासित समतापर्वस्तादिनेऽन्योन्यस्य वै।।
असमता ऽ सुरत्वस्य दाहः कार्यो होलिकावत्।।१।।

होली समता का त्यौहार है। उस दिन निश्चय ही आपस की असमता रूपी असुरता का होली की तरह दाह करना चाहिए।

कमप्यत्र समानेऽस्मिन्प्रभेदाज्ज्ञान्मजिङ्ग्योः।
नोच्यं नीचं च मन्तव्यं प्रभोरेकस्य सन्ततौ।।२।।

जन्म और लिंग के प्रभेद के कारण इस समान और एक प्रभु को सन्तति में किसी को भी ऊँचा और नीचा नहीं मानना चाहिये।

गुणकर्मस्वभावानां कृत्रिमभेदेन मानवाः।
जायन्ते लिंग जातिभ्यां नीचाश्रच्चास्तु न वस्तुतः ।।३।।

गुण, कर्म और स्वभाव की कृत्रिम भिन्नता से मनुष्य उच्च और नीच बनते हैं, लिंग और जाति से नहीं। वैसे वास्तव में कोई भी उच्च और नीच नहीं होता।

दुरीकुर्वन्भिमतां विभेदानां प्रयत्नः।
आत्मीयत्वमेकतां च स्वीकुर्यात्स्वात्मवत्तया।।४।।

भेद–प्रभेदों की विषमता को दूर हटाते हुए एकता और आत्मीयता (अपनेपन) को अपनाना चाहिए।

निन्दितं चार्थिकं लोके विषमत्वमसङ्गतम्।
प्राप्तोव्यो निखिलैस्तत्र चावसरस्तुल्योचतः।।५।।

संसार में आर्थिक विषमता, असंगत और निन्दित है। इस जगती–तल में सभी को (चाहे गरीब हो या अमीर) समान एवं उचित अवसर मिलने चाहिये।

भूत्वा भीरुः दुर्बलो वा दीनस्तिष्ठन्ने मानवः।
नृसिंहवच्च निर्भयो वीरो जीवेदिह सदा।।६।।

दीन, दुर्बल और डरपोक होकर मनुष्य को नहीं रहना चाहिए। सर्वदा इस संसार में नृसिंह की तरह निर्भय और वीर का जीवन जिये।

धूलिं च मातृभूमेस्तु मस्तके धारयन्ति ये।
सदैव तां च ध्यायन्ति नरा धन्यजीवनः।।७।।

जो मनुष्य मातृभूमि की धूलि को मस्तक पर धारण करते अर्थात् बढ़ाते हैं और सदा उस मातृभूमि का ध्यान रखते अर्थात् उसके लिये त्याग करते हैं, वे मनुष्य धन्य जीवन वाले अर्थात् सौभाग्यशाली हैं।

वैमनसूं दुर्भावात्वं ज्वालयेच्य समूलतः।
समानत्वेन प्रेम्णा च सानंदं निवसेदिह।।८।।

द्वेष और दुर्भाव को जड़ सहित जला देना चाहिए। संसार में समानता से और प्रेम से आनन्दपूर्वक रहना चाहिए।

उचितमेव कर्त्तव्यं कर्मात्र खलु सर्वदा।
जनकस्याप्यनुचितं चादेश कुर्यान्नैव हि।।९।।

संसार में सदा उचित कर्म ही निश्चय रूप से करना चाहिए। पिता की भी अनुचित आज्ञा अर्थात् बात को नहीं मानना चाहिये।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

वायु सेना ने कहा बालाकोट.....

ज्यादा आतंकी मार गिराए। जबकि इससे पहले एयर वाइस मार्शल आर के कपूर ने २८ फरवरी को रक्षा मंत्रालय में एक मीडिया ब्रीफिंग में कहा था कि इस हमले में कितने आतंकी मारे गये इस पर कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। पिछले ही हफ्ते केन्द्रीय राज्य मंत्री एस एस अहलूवालिया ने भी दावा किया था, हम उनकेइलाके में गए और उसे तबाह कर दिया। हमारा मकसद किसी को मारना नहीं था। अब अमित शाह के इस दावे के साथ ही एयर स्ट्राइक के मसले पर राजनीतिक विवाद बड़ा होता दिख रहा है। कांग्रेस नेता मनीष तिवारी ने एयर वाइस मार्शल आर के कपूर के बयान का हवाला देते हुए अमित शाह के दावे पर सवाल उठाया है। मनीष तिवारी ने पूछा कि जब सरकार खुल कर कुछ नहीं कह पा रही है तो फिर अमित शाह के दावे का आधार क्या है। इसके साथ ही कांग्रेस नेता कपिल सिब्बल, पी चिदंबरम, दिग्विजय सिंह, नवजोत सिंह सिद्धू के साथ ममता बनर्जी, अरविंद केजरीवाल सहित कई लोगो ने इस आपरेशन पर सवाल उठाए। ऑपरेशन बालाकोट को लेकर विपक्ष के सवालों का जवाब प्रधानमंत्री मोदी ने दिया।' उन्होंने कहा कि हमें अपनी सेना पर भरोसा करना चाहिए, उस पर सवाल नहीं उठाना चाहिए।

शेष पृष्ठ 6 का

हर कोड़े पर वन्देमातरम् गान.....

तनिक भी विचलित नहीं हुए। अगले दिन भी प्रातःकाल उन्होंने पुनः वंदेमातरम् का गायन किया। यह जानकारी मिलते ही जेल अधीक्षक तिलमिला उठा। अगले दिन रामचन्द्र राव को जेल के मैदान में लाया गया। जेल के वार्डनों ने उन्हें निर्वस्त्र कर दिया। उन्हें टिकटिकी पर खड़ा कर दिया गया। अंग्रेज अधीक्षक की उपस्थिति में उन पर बेंत बरसाने का आदेश दिया गया। जेल वार्डन ने जैसे ही वीर रामचन्द्र राव की छाती पर बेंत का प्रहार किया उनके मुख से गरज उठा 'वंदेमातरम्' का जयघोष। एक के बाद एक २४ बेंत प्रहारों से वीर रामचन्द्र राव लहूलुहान हो जाने पर भी वंदेमातरम् का नाद गुंजाते रहे। उनके सारे शरीर से रक्तस्राव होता रहा। उनके नितम्बों का मांस कटछंट कर छड़ियों से चिपकने लगा किन्तु इस वीराग्रणी आर्यवीर के मुख से एक बार भी आह तक नहीं निकली। क्रान्तिकारियों के मुकुटमणि स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर ने वीर रामचन्द्र राव को एक सार्वजनिक सम्मान समारोह में सम्मानित करते हुए घोषित किया था कि—'वीर रामचन्द्र राव के नाम के साथ वंदेमातरम् शब्द लगाया जाए।' वीर रामचन्द्र राव आजीवन अपनी पूर्ण शक्ति सहित आर्य समाज के माध्यम से राष्ट्र धर्म की सेवा में रत रहे।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 4 का

नारियल एक गुण.....

हल्की आँच पर सिकाई करते हुए नाखून की गोलाई में मालिश करें, फिर गुनगुने पानी से हाथ–पैर धो लें। इसके फूल को सफेद चंदन के साथ पीसकर शक्कर मिलाकर शर्बत बना लें और इसका सुबह–शाम सेवन करें, श्वेत प्रदर में आराम मिलता है। इसके तेल में थोड़ा–सा भीमसेनी कपूर मिलाकर योनि भाग में लगाएँ, इससे योनि कंडु (जननांग में खुजली) का निवारण होता है। कच्चे नारियल के पानी से सिर के बाल धोएँ, बाल खूब तेजी से बढ़ने शुरू हो जाते हैं। इसके तेल में थोड़ा कपूर व एक नींबू का रस मिलाकर, उससे बालों की मालिश करें, रात भर लगा रहने दें और सुबह सिर धो लें। इससे रूसी दूर होती है। पेशाब कम आने की स्थिति में नारियल का पानी विशेष सहायक है। इसकी गिरी खाने से घुटनों का दर्द खत्म हो जाता है। त्वचा को आकर्षक और आभामय बनाने के लिए प्रतिदिन या तीसरे दिन नारियल व जैतून के तेल की मालिश करें। गौनेरिया व सिफलिस में करज की जड़ का स्वरस, नारियल का दूध व चूने का पानी मिलाकर प्रयोग करने से फायदा होता है। नारियल के तेल में थोड़ा–सा नींबू का रस मिलाकर पीने से उल्टियाँ आना बंद हो जाती हैं। यदि हाथ में मिट्टी के तेल की बदबू समा गई हो, तो नारियल का तेल हाथ पर मल लेना चाहिए। बदबू दूर हो जाएगी। मिश्री व नारियल की गिरी खाने से हिचकी आनी बंद हो जाती है। मुँह में छाले हो गए हों तो कच्चे नारियल की गिरी दिन में कई बार खाने से राहत मिलेगी। पौष्टिक तत्वों से भरपूर इस फल को औषधीय या सौंदर्य प्रसाधन के रूप में अपनाकर इसके गुणों का सही–सही लाभ उठाएँ।

शेष पृष्ठ 7 का

हिंदुत्व के मूल तत्वों .....

नहीं कि सजग हिन्दू समाज ही राष्ट्र को सुरक्षित रख सकता है। उसके लिये हिंदुओं को कट्टरवादी व साम्प्रदायिक भी कहा जायेगा उनकी अनेक आलोचनाएँ भी होगी। लेकिन यह कहना अशुद्ध नहीं की यही तेजस्वी, साम्प्रदायिक व आक्रोशित हिन्दू ही धर्म व देश की रक्षा कर पायेंगे? आज देशभक्ति व राष्ट्रवाद को साम्प्रदायिक कहकर नकारात्मक आलोचना सहनी पड़ती है। शत्रु देश पाकिस्तान व देशद्रोही जिहादियों पर जब आक्रमक होने के विचार का प्रसार होता है तब भी हिंदुओं को साम्प्रदायिक कहा जाता है। समान नागरिक सहिंता की चर्चा हो या फिर बंग्लादेशी, पाकिस्तानी और रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठियों को बाहर निकालने का जनाक्रोश हो हिंदुओं पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाना समान्यतः प्रगतिशील विचार बन जाता है। ऐसी विपरीत स्थिति में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये अगर हिंदुओं को कट्टरवादी, साम्प्रदायिक और समयानुसार संविधान का पालन करते हुए हिंसक भी होना पड़े तो इसमें अनुचित क्या है? महर्षि अरविन्द ने वर्षो पूर्व लिखा था कि हमने शक्ति को छोड़ दिया है, इसलिए शक्ति ने भी हमें छोड़ दिया। अतः हिंदुत्व के मूल तत्व को पहचानो और शान्ति के लिये शक्ति के उपासक बनो।

शेष पृष्ठ 8 का

शहीद महावीर सिंह का.....

सामाजिक तथा राजनैतिक, पुस्तकों का अवलोकन (अध्ययन) करने को कहिए। समाज से मेरा मतलब आर्य सामज अथवा अन्य संकीर्णता व्यंजक समाज नहीं है, परन्तु जन साधारण का है। क्योंकि ये धार्मिक समाज मेरे सामने संकीर्ण होने के कारण कोई भी मूल्य नहीं रखते हैं और साथ ही इस संकीर्णता तथा स्वार्थपरता तथा अन्यायपूर्ण होने के कारण मैं सब धर्मों से दूर रहना चाहता हूँ और दूसरों को भी ऐसा ही उपदेश देता हूँ। केवल एक बात मानता हूँ (और) उसको सबसे बढ़कर तथा मनुष्य तथा समाज का (के लिए) कल्याणकारी समझता हूँ। वह है, 'मनुष्य का मनुष्य तथा प्राणी–मात्र के साथ कर्तव्य–बिना किसी जाति–भेद, रंगभेद, धर्म तथा धनभेद के।' यही मेरा उपदेश बेटी सरोजिनी को है और दूसरे हमारे भाइयों को भी है।

पूज्यवर, आज जब मैं देखता हूँ कि सबकी बहने समाज की सेवा के लिए अपने को तन, मन, धन से लगाये हुए हैं, अभागा मैं ही ऐसा हूँ जिसकी ऐसी कोई बहन नहीं। यद्यपि यह मेरी संकीर्णता है क्योंकि अपने मन के अनुसार दूसरी बहनें भी अपनी ही हैं और वैसी ही समझता भी हूँ, परन्तु मैं उनकी संख्या में बढ़ती चाहता हूँ, जिसकी कुछ आशा मैं अपनी पूजनीय जिया महताब कुंवरि से करता था। उनका बहुत समय से कोई समाचार नहीं पाया है। यदि हो सके, मेरा चरण–स्पर्श कहियेगा। श्रीमान दादा जी सरदारसिंह जी को, जो मेरे पहले–पहल गुरु और आपके शिष्य हैं, सादर प्रणाम कहें। धनराजसिंह का हाल लिखना, चाचा वर्ग तथा सब माताओं को चरण–स्पर्श, भाइयों को नमस्ते। पूज्य बुआ जी तथा माता जी को प्रणाम, लली दोनों बहनों को, मुंशीसिंह जी को नमस्कार, भानजे तथा भतीजे को प्यार। इति शुभम्। पत्र शीघ्र भेजियेगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

हृदय को प्रेम से भर कर सभी कृष्ण प्रेममयी हिन्दू भाइयों को सपरिवार निमंत्रण

नाचिये, गाईबे होली मनाईये गुजिया

खिलाईये कृष्ण प्रेममयी प्रीति कर रंग

रसिया गायिका प्रीति राधे संग

होली मिलन

दिनांक : 19 मार्च, मंगलवार समय : 2.30 बजे दोपहर बाद

श्री अमरनाथ यात्रियों का हार्दिक अभिनन्दन

कार्यक्रम स्थल : हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

राष्ट्रीय अध्यक्ष	:	श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय महामंत्री	:	श्री मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री	:	वीरेश त्यागी
यात्रा अधिकारी	:	मनीष निगम

आयोजक : अखिल भारत हिन्दू महासभा

कार्यालय : हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली -110001
दूरभाष : 011-23365138, 23365354
Email : info@akhilbharathindumahasabha.org,
akhilbharat_hindumahasabha@yahoo,com
Website : www.akhilbharathindumahasabha.org

कबिरा खड़ा बजार में

शांति की नौटंकी करता है पाक

अभिनदन की रिहाई का पाकिस्तानी संसद में इस आशय की घोषणा करते हुए उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि वह ऐसा शांति की पहल के तौर पर करेंगे। यह सही है कि पाकिस्तान ने जेनेवा संधि का पालन किया लेकिन यह मानने का तो सवाल ही नहीं उठता कि वह शांति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखा रहा है। अगर पाकिस्तान शांति के प्रति तनिक भी समर्पित होता तो वह जैश–ए–मोहम्मद जैसे आतंकी संगठन को संरक्षण देने के साथ ही ऐसा न करने का बहाना नहीं बना रहा होता। यदि इमरान खान और उनका नया पाकिस्तान शांति का सचमुच पक्षधर है तो उसे जैश सरगना मसूद अजहर को उसके सुरक्षित ठिकाने से निकालकर भारत के हवाले करना चाहिए। उसे जैश और लश्कर सरीखे आतंकी संगठनों पर पाबंदी लगाने का स्वांग करना भी छोड़ना चाहिए। वह एक अरसे से न केवल यही कर रहा है, बल्कि दुनिया से छल भी कर रहा है। इसी कारण अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों को बार–बार यह कहना पड़ रहा है कि वह अपने यहां के आतंकी ढांचे को नष्ट करे और फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स उसे ग्रे सूची से बाहर नहीं कर रहा। हैरत नहीं कि अभिनदंन को रिहा करने के फैसले के पीछे पाकिस्तान का मूल मकसद दुनिया को अपना नकली चेहरा दिखाना और अंतरराष्ट्रीय दबाव से मुक्त होना हो। एक अन्य मकसद भारत के आक्रामक तेवरों से पिंड छुड़ाना भी हो सकता है। सच्चाई जो भी हो, भारत को उसके इस नए झांसे में बिल्कुल नहीं आना चाहिए। अभिनदंन की वापसी के साथ हम भारतीयों को इसका भी मान होना चाहिए कि उन्होंने पुराने माने जाने वाले युद्धक विमान मिग–२१ के जरिए कहीं अधिक उन्नत किस्म के पाकिस्तानी लड़ाकू विमान एफ–१६ को ध्वस्त करने का जो शौर्य दिखाया, वह भारतीय वायुसेना और उसके पायलटों के युद्ध कौशल का एक ऐसा जबर्दस्त प्रमाण है, जिसे पाकिस्तान आसानी से नहीं भूल सकता। भारत को ऐसे जतन जारी रखने चाहिए, जिससे पाकिस्तान इस भारतीय योद्धा के पराक्रम के साथ यह भी न भूल सके कि अगर उसने अपने आतंकियों के सहारे उसे तंग करने का सिलसिला कायम रखा तो बालाकोट दोहराया जा सकता है। पाकिस्तान जब तक सुधरता नहीं, उसे दंडित करने का कोई मौका छोड़ना नहीं चाहिए। निःसंदेह वह भारत की आक्रमकता से सहमा है, किंतु अभी ऐसे कोई संकेत नहीं कि वह सुधरने के लिए तैयार है। इस समय दुनिया को राजनीतिक तौर पर एकजुट होने का संदेश देना चाहिए। यह वह समय है, जब राजनीतिक लाभ–हानि से अधिक महत्ता देश के मान–सम्मान को दी जानी चाहिए। लेकिन हमारे राजनीतिक दल कहीं न कहीं से अब भी सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगने से बाज नहीं आ रहे हैं।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 13 मार्च से 19 मार्च 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।